

करिंजि

कार्यालय गृह पत्रिका

तेइसवाँ अंक
वर्ष 2022



75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II),

तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालई,

तेनामपेट, चेन्नई - 600 018



हिंदी दिवस 2021 के अवसर पर हिंदी गृह पत्रिका कुरिंजी के 22 वें अंक का विमोचन करते हुए
अधिकारीगण



वर्ष 2020-21 के लिए एएमजी-II अनुभाग की ओर से राजभाषा हिंदी के श्रेष्ठ कार्यान्वयन का
शील्ड प्राप्त करते हुए श्री जे. मोहम्मद अशरफ उपमहालेखाकर/ एएमजी-II

कुरिंजि परिवार

मुख्य संरक्षक	को.प. आनंद प्रधान महालेखाकार
मार्गदर्शक	जी.राजेन्द्रन वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
सलाहकार	ई. रामनाथन वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
संपादक मंडल	वी.चित्रा, हिंदी अधिकारी अभिषेक, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक मोहन प्रकाश, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

अंक	तेइसवाँ
प्रकाशक	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी
मूल्य	राजभाषा के प्रति निष्ठा
टिप्पणी	संपादक मंडल को पत्रिका में छपी रचनाओं में व्यक्त रचनाकारों के विचार सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

रचनाकार स्वयं अपनी रचनाओं की मौलिकता के लिए उत्तरदायी हैं ।

आपके अभिमत

भारत सरकार
GOVT. OF INDIA
प्रधान महालेखाकार (ल. एवं ह.) का कार्यालय, असम
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) ASSAM
मैदामगांव, बेलतला, गुवाहाटी - 781 029
MAIDAMGAON, BELTOLA, GUWAHATI - 781 029

पत्र संख्या: हिंदी कक्षा/पत्रिका समीक्षा/2022-23/46
दिनांक: 25/03/2022

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, लेखापरीक्षा भवन,
361, अण्णा सालई, तेनामपेट, चेन्नई- 600018

25 MAR 2022

संदर्भ:- स.मले.(लेप-II.)/हि.अ./7-23/कुरिजी/2021-22/156 दिनांक-01.03.2022

विषय: हिंदी पत्रिका "कुरिजी" के बाइसवें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "कुरिजी" के 22वें अंक की प्राप्त हुई। पत्रिका की यह प्रतियां भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं जानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है। पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित श्री अभिषेक, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक की कविता "बनारस", श्रीमती वी.राधा, सहायक पर्यवेक्षक/एएमजी का लेख "सफलता का रहस्य" तथा श्री चन्दन कुमार सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी का लेख "पर्यावरण बनाम विकास" प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

योगेश कुमार मिश्र
(योगेश कुमार मिश्र)
हिंदी अधिकारी

MS 071
7/04/2022



कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पर्यावरण
एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा
द्वितीय बहुतनीय कार्यालय भवन, छठा तल, निजाम पैलेस,
ए.जे.सी. रोड 234/4, कोलकाता-700 700.
फोन: 2289/4111/12/13-033 फैक्स: 4060-2289-033
ई-मेल: bresdkolkata@cag.gov.in

संख्या हि.अ./1(17)21/2012-13/2021-22/165

27 JUN 2022
दिनांक-27.06.2022

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी
लेखापरीक्षा भवन,
अण्णा सालई, तेनामपेट,
चेन्नई- 600 018

विषय:- हिंदी पत्रिका "कुरिजी" के 22वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिप्रिया।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "कुरिजी" के 22वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्री पी. असोकन जी का आलेख "तिरुक्कल", सुश्री एस. सुब्रह्माला जी की कहानी "एक फूल की कहानी", सुश्री जी. संगीता जी का आलेख "तमिल भाषा के बारे में रोचक तथ्य", श्री अभिषेक जी की कविता "बनारस", और श्री वी. सविता जी की कविता "यह जादू है संगीत का", अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "कुरिजी" इसी तरह निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

भवदीय

हस्ता/-
हिन्दी अधिकारी

HS/92
04/07/2022

आपके अभिमत

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

पत्रांक:- हि.अ./ले.प./प्रतिभाव /2022-2023/37/08

दिनांक:- 20.04.2022

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार(ले.प.-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी
लेखापरीक्षा भवन, 361, अन्ना सालई, तेनामपेट, चेन्नई -600018

विषय:-हिंदी गृह पत्रिका "कुरिंजि" के 22वें अंक के प्रतिभाव का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "कुरिंजि" के 22वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के इस अंक में विविध विषयों पर केन्द्रित पठनीय और जानवर्धक रचनाओं को संकलित किया गया है। पत्रिका की साज-सज्जा और आवरण पृष्ठ भी आकर्षक हैं।

पत्रिका में सम्मिलित तमिल भाषा के शास्त्रीय ग्रन्थ तिरुक्कुरल की मानवतावादी शिक्षाओं पर केन्द्रित श्री पी. असोकन रचित 'तिरुक्कुरल', स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में तमिलनाडु के अमूल्य योगदान पर केन्द्रित सुश्री वी. चिन्ना रचित 'स्वतंत्रता प्राप्ति-अमृत महोत्सव विशेष', ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध पुदुचेरी शहर की अन्यतम विशेषताओं पर केन्द्रित श्री गिरीश कुमार रचित 'पुदुचेरी: सार्वभौमिक एकता का प्रतीक' तथा तमिल भाषा के शास्त्रीय और व्याकरणिक विशिष्टताओं पर केन्द्रित सुश्री जी. संगीता रचित 'तमिल भाषा के बारे में रोचक तथ्य' विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका "कुरिंजि" का भविष्य और उज्ज्वल हो, यह निरंतर राजभाषा सेवा के पथ पर अग्रसर रहे, इसी कामना के साथ समस्त पत्रिका परिवार को बधाई एवं शुभकामनायें।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

HS/33
28/04/22

23
विविध
20/04/22

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर 440001

संख्या.राजभाषा 8(II)/2022-23/अ.क्र.
दिनांक:- /04/2022

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी
विषय : पत्रिका "कुरिंजि" के 22वें अंक पर प्रतिक्रिया संबंधी।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की पत्रिका "कुरिंजि" के 22वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कवितारें रोचक एवं जानवर्धक हैं। विशेषकर श्री गिरीश कुमार, डी.ई.ओ. का लेख 'पुदुचेरी: सार्वभौमिक एकता का प्रतीक', सुश्री वी. रुक्मिणी, सहायक पर्यवेक्षक का लेख 'प्रकृति के नियम' तथा श्री पवन कुमार, लेखापरीक्षक की रचना 'उपयुक्त समय' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

PADMALATA S. SARMA,

SAO(CO-ORD)-PSS, COORD

(श्रीमती पी.एस.सर्मा)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी अनुभाग

HS/14
18/04/2022

अनुक्रमणिका

क्र.स.	रचना के नाम	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	प्रधान महालेखाकार का संदेश		5
2	संपादक की कलम से		6
3	कविता	हेमंत प्रिय टाँक	7
4	तमिलनाडु राज्य की सैर	मोहन प्रकाश	9
5	अग्निपथ योजना	श्रीराम	13
6	सहारा	पवन कुमार	15
7	चुटकुले	वी.राधा	19
8	योग	वी.एम.बिंदु	21
9	आईएनएस विक्रांत	जी.संगीता	23
10	स्वतंत्र एवं विकसित भारत	हेमन्त तालेपा	25
11	पहेली	टी. विद्या देवी	27
12	नए भारत की कल्पना	अभिषेक	29
13	मेरे प्यारे पिताजी	वी .राधा	30
14	व्यायाम करना जरूरी है।	वी.सविता	31
15	पहेली	वी.राधा	32
16	सफल जीवन का रहस्य	वी.चित्रा	34
18	दो दिन "ऐलागिरी का टूर"	श्री संतोष चौधरी	37
19	रसीदी टिकट	संजीव कुमार	38
20	विटामिन खनिज की कमी और पोषण का महत्व	वी. सविता	41
21	प्रौढ़ शिक्षा	गिरीश कुमार	42
22	ऐलागिरी हिल्स की यात्रा	अविनाश कुंदन	45
22	कल्याण कक्ष की गतिविधियाँ		47



प्रधान महालेखाकार का संदेश

प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी इस कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका "कुरिंजि" का तेइसवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे असीम हर्ष की अनुभूति हो रही है। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिये किये जा रहे सुप्रयासों में विभागीय पत्रिकाओं का सदैव विशिष्ट स्थान रहा है। हिंदी भाषा में अपने विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने के माध्यम बनने के साथ-साथ ये राजभाषा हिंदी में कार्यालयीन कामकाज करने की मनोभावना को उजागर करती हैं।

यह वर्ष विशेष है क्योंकि सम्पूर्ण भारत में आजादी का अमृत महोत्सव बड़े धूम धाम से मनाया जा रहा है। आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में इस कार्यालय की गृह पत्रिका पाठक वर्ग को समर्पित है। यह गृह-पत्रिका हिंदी की विकास यात्रा को गति प्रदान करने में यथासंभव योगदान दे रही है जिसके लिए मैं उन सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को बधाई देता हूँ जिनके अथक प्रयासों से "कुरिंजि" एक सफल गृह पत्रिका का रूप ले सकी है।

अपने कार्यालयीन कार्य में हिंदी का प्रयोग करते हुए, अन्य भारतीय भाषाओं से परस्पर आदान-प्रदान करके राजभाषा हिंदी को और जीवंत बनाए रखें ताकि हमारी सभी भाषाओं को समृद्ध बनाया जा सके। मुझे पूर्ण विश्वास है कि "कुरिंजि" का यह अंक भी पूर्व अंकों की भाँति हिंदी के विकास एवं प्रचार - प्रसार की दिशा में प्रेरणादायी सिद्ध होगा। पत्रिका की अनवरत प्रकाशन और उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(को.प.आनंद)

प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा - II)

तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, चेन्नई



संपादक की कलम से

इस कार्यालय की गृह-पत्रिका "कुरिंजि" का तेइसवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्षानुभूति हो रही है। पत्रिका के माध्यम से कर्मचारियों को अपनी सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का सुअवसर मिलता है जिससे अनेक छिपी प्रतिभाएँ परिलक्षित हुई हैं जिन्होंने विभिन्न विषयों एवं पहलुओं पर सरल और सुबोध रूप से अपना विचार व्यक्त किया है।

पत्रिका राजभाषा हिंदी के कार्यालयीन प्रयोग को उत्तरोत्तर विकासोन्मुखी दिशा प्रदर्शित करती हुई अपनी अनवरत साहित्यिक यात्रा पर तेइसवें अंक की ओर अग्रसर है, इसके लिए हम आभारी हैं। आप सभी के अतुलनीय सहयोग से ही यह संभव हो सका है। कार्य की निरंतरता अपने आप में सफलता का प्रतीक है। हमें पूरी आस्था है कि हम अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे क्योंकि कवि कहते हैं कि "कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती है।"

हिंदी साहित्य की विविध विधाएँ लेख, कहानी, व्यंग्य तथा सारगर्भित विषयों पर कविताएँ इस अंक के आकर्षण हैं। मैं इस अंक में योगदान देनेवाले सभी रचनाकारों को आभार प्रकट करती हूँ। आशा है कि इस अंक को भी पाठकगण रुचिकर और उपयोगी पायेंगे एवं पूर्व की भाँति पाठकों का स्नेह "कुरिंजि" को मिलता रहेगा।

प्रबुद्ध पाठकों का सहयोग व उनकी प्रतिक्रिया इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी बनाने में अपनी अहम भूमिका अदा करती आ रही है, साथ ही अनुरोध है कि पत्रिका की समीक्षा कर अपने बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रियाओं से हमें प्रेरित करें ताकि हम आपके सुझावों/प्रतिक्रियाओं की ओर ध्यान देकर आगामी अंकों में पत्रिका को अति उपयोगी एवं कारगर बना सकें।

वी.चित्रा,
हिंदी अधिकारी



हेमंत प्रिय टाँक
लेखापरीक्षक

कविता

तुम रहती हो दूर पूर्वी घाट के किसी गांव में
और मैं रेगिस्तान के दूर तन्हा किसी गांव में
मैं आऊंगा हर बार खोजते हुए हर छुट्टी में ...
तुम भी आना कभी मुझे देखने
अगर तुम जाओ बारिश में तुम्हारे गांव में
और मैं फंस जाऊं चेन्नई में उसी तूफान में..
पर यह दूरी भी दुखेगी ..
और मैं ढूँढ लूंगा कोई रास्ता तुझ तक आने का
शायद मैं जाऊंगा घर वापस या किसी काम से
और रुक जाए मेरे पत्र या रुक जाए नेटवर्क फोन का
मैं लूंगा रेलगाड़ी का वो लंबा सफर
तुम्हें देखने का हर त्यौहार पर मेरे प्रिय
हां कभी फंस जाऊं दूर रेगिस्तान में मेरे गांव में
मैं दूंगा एक प्यार भरा पत्र कोरोमंडल के किसी फकीर को
जो पहुंचा दे तुझ तक मेरी खैरियत..
मत जाना बिना बताए किसी लंबे सफर पर
मुझे आना पड़ेगा कोसों दूर हर बार
मैं करूंगा हर कोशिश तुम्हारे साथ की
सीख लूंगा तमिल तेलुगू और उर्दू भी
तुम करो यात्रा जितनी दूर रेलगाड़ी या जहाज से
मैं आऊंगा तुम्हारे पीछे जरूरत पड़े तो साइकिल से भी..
अगर तुम बनके पायलट उड़ो जेट में नीले आसमान में .
मैं गुजारिश करूंगा इसरो से करे तुम्हें रेडियो मेरे इंतजार का
अगर तुम लोगी बात ना करने की शपथ तो .
फिर भी कोई बात नहीं मैं गाऊंगा तुम्हारे लिए
सीख लूंगा मौन की बात और संकेत मौन के भी
पर मेरे प्रयासों का अंत ना होगा तुम्हारी चाहत के लिए मेरे प्रियतम ||



तमिलनाडु राज्य की सैर

मोहन प्रकाश
कनिष्ठ अनुवादक

तमिलनाडु भारत के दक्षिण में अवस्थित एक ऐसा राज्य है जो अपनी महान धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहाँ की वेशभूषा, खानपान, संस्कृति, इतिहास, स्थापत्य, शिल्प और चन्दन की खुशबू से महकते मंदिर, प्राकृतिक स्थलों की सुंदरता पर्यटकों को बेहद आकर्षित करती है। इस राज्य ने चोलों, चेरों और पल्लवों जैसे कई राजवंशों के उत्थान और पतन को देखा है। यह राज्य प्रत्येक राजवंश के रीति-रिवाजों और परंपराओं से समृद्ध है।

तमिल शिल्प कौशल की समृद्ध विरासत को मौर्य काल से पहले कई कालखंडों में प्रलेखित किया गया है। यहां मंदिरों, रोजमर्रा की रसोई की वस्तुओं और खंबे बनाने के लिए इस्तेमाल वुड कार्विंग एवं थ्रीडी इफ़ेक्ट चित्रों की प्रसिद्ध कला तंजौर पेंटिंग काफी लोकप्रिय है। गौरवशाली प्राचीन संस्कृति एवं आधुनिकता का बेजोड़ समन्वय आपको यहाँ हर शहर में देखने को मिलेगा।

चलो हम अब तमिलनाडु के कुछ प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलों की ओर चलते हैं

ऊटी "पहाड़ियों की रानी" पर्वत प्रेमियों के लिए अच्छी जगह है। टॉय ट्रेन इस खूबसूरत पर्वतीय स्थल के मनोरम दृश्यों का आनंद लेने की सुविधा देती है। नीलगिरि माउंटेन रेलवे के पास पूरे एशिया में सबसे लंबा ट्रेक है, और यह सबसे अच्छी ट्रेन राइड्स में से एक है जिसका आपको कभी भी अनुभव करने का मौका मिलेगा। जब आप शहर में हैं, तो आपको प्रसिद्ध डोड्डाबेट्टा पीक की यात्रा अवश्य करनी चाहिए।

कन्याकुमारी, भारतीय प्रायद्वीप के सबसे दक्षिणी छोर पर स्थित, तमिलनाडु राज्य का एक तटीय शहर है। कन्याकुमारी महान धार्मिक महत्व का स्थल है क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि यह संगम काल से ही अस्तित्व में है। कन्याकुमारी पहले केप कोमोरिन के रूप में जाना जाता था। कन्याकुमारी पहाड़ों और समुद्री तटों, धान के खेतों और नारियल के पेड़ों से घिरा हुआ है। प्राचीन काल से ही, कन्याकुमारी धर्म, कला और संस्कृति के प्रमुख केंद्रों में से एक रहा है।

भारत में यह एकमात्र ऐसी जगह है जहाँ आप सूर्योदय और सूर्यास्त का आनंद एक ही समुद्र तट पर ले सकते हैं।

विवेकानन्द रॉक मेमोरियल तमिलनाडु के कन्याकुमारी शहर में स्थित प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। सन 1892 में स्वामी विवेकानंद कन्याकुमारी आए थे। एक दिन वे तैर कर इस विशाल शिला पर पहुंच गए। इस निर्जन स्थान पर साधना के बाद उन्हें जीवन का लक्ष्य एवं लक्ष्य प्राप्ति हेतु मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ था। स्वामी विवेकानंद के अमर संदेशों को साकार रूप देने के लिए ही 1970 में उस विशाल शिला पर एक भव्य स्मृति भवन का निर्माण किया गया। समुद्र की लहरों से घिरी इस शिला तक पहुंचना भी एक अलग अनुभव है। कन्याकुमारी मंदिर, जिसे भगवती अम्मन मंदिर या कुमारी अम्मन मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, पूरे भारत के प्रमुख हिंदू मंदिरों में से एक है। देवी भागवती को समर्पित, कन्याकुमारी मंदिर का इतिहास 3000 साल पुराना है। इसलिए, समय के साथ, यह हिंदुओं के बीच एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल बन गया है।

कांचीपुरम 'एक हजार मंदिरों के सुनहरे शहर' के रूप में और सुंदर कांचीपुरम साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। यह विशेष रूप से एक संस्कृति और दार्शनिक केंद्र होने के लिए जाना जाता है। इस शहर में प्रसिद्ध कांची कामाक्षी मंदिर है, जो भगवान शिव की पत्नी हैं। कैलासनाथर मंदिर भी अपनी शानदार वास्तुकला के लिए लोकप्रिय है। शहर में सबसे ऊंचा, सबसे बड़ा और सबसे प्रभावशाली मंदिर, 40 एकड़ में फैला एकम्बेश्वर मंदिर है। कांची मठ में शाम के समय कच्चेरी या दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

कोडाइकनाल, भारत में प्रसिद्ध हनीमून स्थलों में से एक है। कोडाइकनाल का अर्थ है "वनों का उपहार"। पर्वतीय स्थलों की राजकुमारी के रूप में प्रसिद्ध, कोडाइकनाल पर्यटकों को संस्कृति और प्रकृति का सही मिश्रण प्रदान करता है।

मदुरई भारत के सबसे पुराने शहरों में से एक है। इसका निर्माण कमल के रूप में किया गया था। मदुरई को तमिलनाडु की सांस्कृतिक राजधानी माना जाता है। यहां का मुख्य आकर्षण मीनाक्षी मंदिर है जिसके ऊंचे गोपुरम और दुर्लभ मूर्तिशिल्प श्रद्धालुओं और सैलानियों को आकर्षित करते हैं। तिरुपुरकुंड्रम भगवान मुरुगा (कार्तिकेय) को समर्पित महत्वपूर्ण पुराने मंदिरों में से एक है और शहर से लगभग 8 किमी दूर एक पहाड़ी पर स्थित है। गांधी संग्रहालय में गांधी की खून से सनी धोती और कुछ अन्य कलाकृतियां हैं। मदुरई अपने अद्भुत स्ट्रीट फूड के लिए भी लोकप्रिय है।

मामल्लापुरम या **महाबलीपुरम** जटिल नक्काशीदार मंदिरों और रॉक-कट गुफाओं के लिए प्रसिद्ध ऐतिहासिक रूप से एक महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल है, जो तमिलनाडु राज्य में बंगाल की खाड़ी के किनारे कोरोमंडल तट पर स्थित है। कुछ प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल शोर मंदिर, पांच रथ मंदिर और मगरमच्छ बैंक शामिल हैं, जो मगरमच्छों की कुछ उत्तम प्रजातियों का घर है।

एरकौडु एक सुंदर छोटा सा खूबसूरत पर्वतीय स्थल, शेवरॉयन पहाड़ियों की गोद में पूर्वी घाटों में आश्चर्यजनक रूप से बसा हुआ है, झरने से लेकर झीलों, चर्चों से लेकर मंदिरों तक और ट्रेकिंग ट्रेल्स से लेकर व्यूप्वाइंट तक, इसमें सैकड़ों स्पॉट हैं, जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। यदि आप सूर्यास्त और सूर्योदय के सर्वश्रेष्ठ चित्रों को कैप्चर करना चाहते हैं, तो **एरकौडु** जरूर जाएं। यह कोयंबटूर से लगभग 190 किमी की दूरी पर स्थित है।

वालपारई कोयंबटूर जिले में आनमलै हिल्स में एक पर्वतीय स्थल है। यह वास्तव में 'सातवां स्वर्ग' है। यह एक ऐसी अर्थव्यवस्था से प्रेरित है, जिसमें काफी हद तक कॉफी और चाय के एस्टेट शामिल हैं, यह रमणीय पर्वतीय स्थल अपने संपन्न पर्यटन उद्योग के कारण भी फलता-फूलता है।

एलगिरी वेल्लोर में स्थित एक छोटा सा पर्वतीय स्थल, बेंगलोर से सिर्फ तीन घंटे की दूरी पर है। यह 30 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है और अपने पर्यटकों को कुछ खूबसूरत डेस्टिनेशन्स जैसे कि जलगमपारई फॉल्स, बागों और गुलाब के बगीचे आदि के खूबसूरत नजारों से रूबरू कराता है। यहां पर स्थानीय रूप से उपलब्ध शहद सबसे शुद्ध और स्वादिष्ट किस्मों में से एक माना जाता है।

मुदुमलै नेशनल पार्क नीलगिरि जिले में कोयंबटूर से 150 किलोमीटर की दूरी पर स्थित मुदुमलाई वन्यजीव अभयारण्य का एक हिस्सा है। यह पश्चिमी घाटों को पूर्वी घाटों से जोड़ता है। यह कई असुरक्षित और लुप्तप्राय जानवरों और पक्षियों की प्रजातियों का घर है। पड़ोसी राज्य केरल और कर्नाटक दोनों की सीमाएं पार्क से सटी हैं। मुदुमलाई को वर्तमान में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित करने पर विचार किया जा रहा है।

धनुषकोडि के तट पर स्थित एक छोटा, कम आबादी वाला समुद्री शहर है। यहाँ पर देश का एक मात्र समुद्री राष्ट्रीय उद्यान है। रामायण एवं महाभारत में उल्लेखित प्रसिद्ध रामसेतु के कारन भी यह शहर लोकप्रिय है। यह छोटा शहर भारत के सबसे अनोखे और असामान्य समुद्र तटों में से एक है।

कुंभकोणम दक्षिणी भारत की दो नदियों कावेरी और अरसाला के बीच में बसा हुआ, तंजावुर जिले के केंद्र में स्थित एक भव्य मंदिर शहर है। यह शहर इतिहास प्रेमियों और भारत की सांस्कृतिक जड़ों को समझने वालों के लिए एक जगह है। यह शहर अपने महामहम त्यौहार के लिए भी जाना जाता है, जिसे महामहम तालाब में हर बारह साल में मनाया जाता है। यह शहर भारतीय इतिहास में सबसे पुराना है और अपने प्रसिद्ध मंदिरों, चोल विरासत और अपने अद्भुत शैक्षिक संस्थानों के लिए भी जाना जाता है। बहुत कम लोग जानते हैं कि इसे भारत का केंब्रिज भी कहा जाता है।

चेट्टीनाडु शिवगंगा जिले में स्थित, तमिलनाडु की समृद्ध विरासत, कला और भव्य वास्तुकला को प्रदर्शित करता है। इस स्थान को एक मंदिर शहर के रूप में जाना जाता है। इस में भव्य हवेली, महलनुमा घर, शानदार मंदिर और आकर्षक संग्रहालय हैं।

वेदांतंगल महाबलीपुरम जिले के करीब स्थित है, जो अपने पक्षी अभयारण्य के लिए जाना जाता है। अगर आप महाबलीपुरम घूमने आते हैं, तो अभयारण्य यात्रा के लिए एक अच्छी जगह है। यह आपको स्थानीय लोगों की संस्कृति से रूबरू कराता है। यह देश का सबसे पुराना जल पक्षी अभयारण्य है।

वेल्लोर एक प्राचीन शहर, वेल्लोर पालार नदी के तट पर स्थित है। वेल्लोर की भूमि ने पल्लवों, चोलों, विजयनगर, राष्ट्रकूट, कर्नाटक और ब्रिटिश जैसे कई साम्राज्यों के गौरवशाली दिनों को देखा है। मार्वलस किले के कारण शहर का एक उपनाम 'द फोर्ट सिटी' है जो वेल्लोर शहर के केंद्र में स्थित है। आपको यहां घूमने के लिए स्वर्ण मंदिर, जूलॉजी पार्क या वेल्लोर किला अच्छी जगह है।

अन्नामलाई टाइगर रिजर्व, जिसे इंदिरा गांधी वन्यजीव अभयारण्य और राष्ट्रीय उद्यान के रूप में अधिक जाना जाता है। यह पश्चिमी घाटों में स्थित है जो जैव विविधता के लिए एक प्रसिद्ध हॉटस्पॉट है। अन्नामलाई टाइगर रिजर्व का दौरा किए बिना तमिलनाडु की यात्रा कभी भी पूरी नहीं होगी।



अग्निपथ योजना

श्रीराम
स.लेप.अ.

परिचय:

यह देशभक्त और प्रेरित युवाओं को चार साल की अवधि के लिये सशस्त्र बलों में सेवा करने की अनुमति देता है।

- इस योजना के तहत सेना में शामिल होने वाले युवाओं को अग्निवीर कहा जाएगा और युवा कुछ समय के लिये सेना में भर्ती हो सकेंगे।
- नई योजना के तहत लगभग 45,000 से 50,000 सैनिकों की सालाना भर्ती की जाएगी और अधिकांश केवल चार वर्षों में सेवा छोड़ देंगे।
- हालांकि चार साल के बाद बैच के केवल 25% को ही 15 साल की अवधि के लिये उनकी संबंधित सेवाओं में वापस भर्ती किया जाएगा।

पात्रता मापदंड:

- यह केवल अधिकारी रैंक से नीचे के कर्मियों के लिये है (जो कमीशन अधिकारी के रूप में सेना में शामिल नहीं होते हैं)।
- कमीशन अधिकारी सेना के उच्चतम रैंक के अधिकारी हैं।
- कमीशन अधिकारी भारतीय सशस्त्र बलों में एक विशेष रैंक रखते हैं। वे अक्सर राष्ट्रपति की संप्रभु शक्ति के तहत कमीशन किये जाते हैं और उन्हें आधिकारिक तौर पर देश की रक्षा करने का निर्देश होता है।
- 17.5 वर्ष से 21 वर्ष की आयु के बीच के उम्मीदवार आवेदन करने के लिये पात्र होंगे।

उद्देश्य:

- इसका उद्देश्य देशभक्त और प्रेरित युवाओं को 'जोश' और 'जज्बे' के साथ सशस्त्र बलों में शामिल होने का अवसर प्रदान करना है।
- इससे भारतीय सशस्त्र बलों की औसत आयु प्रोफाइल में लगभग 4 से 5 वर्ष की कमी आने की उम्मीद है।
- इस योजना में यह परिकल्पना की गई है कि सशस्त्र बलों में वर्तमान में औसत आयु 32 वर्ष है, जो 6-7 वर्ष घटकर 26 वर्ष हो जाएगी।

अग्निवीरों को लाभ:

- सेवा के 4 वर्ष पूरे होने पर अग्निवीरों को 11.71 लाख रुपए का एकमुश्त 'सेवा निधि' पैकेज का भुगतान किया जाएगा जिसमें उनका अर्जित ब्याज शामिल होगा।
- उन्हें चार साल के लिये 48 लाख रुपए का जीवन बीमा कवर भी मिलेगा।
- मृत्यु के मामले में भुगतान न किये गए कार्यकाल के लिये वेतन सहित 1 करोड़ रुपए से अधिक की राशि होगी।
- सरकार चार साल बाद सेवा छोड़ने वाले सैनिकों के पुनर्वास में मदद करेगी। उन्हें स्किल सर्टिफिकेट और ब्रिज कोर्स (Bridge Courses) प्रदान किये जाएंगे।

संबंधित चिंताएँ:

दूसरी नौकरी ढूँढना मुश्किल:

- 'अग्निपथ' योजना से पहले साल में थल सेना, नौसेना और वायु सेना में लगभग 45,000 सैनिकों की भर्ती चार साल के अल्पकालिक अनुबंध पर कि जाएगी। अनुबंध पूरा होने के बाद उनमें से 25% के अलावा बाकी को सेन्य सेवा से मुक्त करना होगा।
- चार साल के सेवा काल का मतलब होगा कि उसके बाद अन्य नौकरियाँ उनकी पहुँच से बाहर होंगी और चार साल की अवधि पूरा करने वाले सैनिक पुनः सेवा के लिये पात्र नहीं होंगे।

कोई पेंशन लाभ नहीं:

- अग्निपथ योजना के तहत नियुक्त किये गए जवानों को उनके चार साल का कार्यकाल समाप्त होने पर 11 लाख रुपए से थोड़ा अधिक की एकमुश्त राशि दी जाएगी।
- हालांकि उन्हें कोई पेंशन लाभ प्राप्त नहीं होगा, अतः ऐसी स्थिति में अधिकांश के लिये अपने और अपने परिवार का भरण-पोषण करने हेतु दूसरी नौकरी की तलाश करना ज़रूरी होगा।

प्रशिक्षण अप्रयुक्त रहना:

- सेना अनुभवी सैनिकों को खो देगी।
- थल सेना, नौसेना और वायु सेना में शामिल होने वाले जवानों को तकनीकी प्रशिक्षण दिया जाएगा ताकि वे चल रहे अभियानों में सहयोग कर सकें लेकिन ये पुरुष और महिलाएँ चार साल बाद सेवा से बाहर हो जाएंगे, जो एक शून्य कि स्थिति पैदा कर सकता है।

देश के लिये ऐसे कदम का महत्त्व:

भविष्य के लिये तैयार सैनिक:

- यह "भविष्य के लिये तैयार" सैनिकों का निर्माण करेगा।
- इससे रोज़गार के अवसर बढ़ेंगे और चार साल की सेवा के दौरान प्राप्त कौशल और अनुभव के कारण ऐसे सैनिकों को विभिन्न क्षेत्रों में रोज़गार मिलेगा।
- इससे अर्थव्यवस्था के लिये एक उच्च-कुशल कार्यबल की उपलब्धता भी होगी जो उत्पादकता लाभ और समग्र सकल घरेलू उत्पाद (सकल घरेलू उत्पाद) की वृद्धि में सहायक होगा।



सहारा

पवन कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

निशा काम निपटा के बैठी ही थी, की फोन की घंटी बजने लगी। मेरठ से विमला चाची का फोन था, “बिटिया अपने बाबू जी को आकर ले जाओ यहां से, बीमार रहने लगे हैं, बहुत कमजोर हो गए हैं। हम भी कोई जवान तो नहीं रहे हैं, अब उनका देखभाल करना बहुत मुश्किल हो गया है। वैसे भी आखरी समय अपने बच्चों के साथ बिताना चाहिए।”

निशा बोली, “ठीक है चाची जी इस रविवार को आते हैं, बापूजी को हम दिल्ली ले आएंगे।” फिर इधर उधर की बातें करके फोन काट दिया।

बापूजी तीन भाई हैं, पुश्तैनी मकान हैं, तीनों वही रहते हैं। निशा और उसका छोटा भाई विवेक दिल्ली में रहते हैं अपने अपने परिवार के साथ। तीन चार साल पहले विवेक को फ्लैट खरीदने के लिए पैसे की आवश्यकता पड़ी, तो बापूजी ने भाइयों से मकान के अपने एक तिहाई हिस्से का पैसा लेकर विवेक को दे दिया था, कुछ खाने-पहनने के लिए अपने लायक रखकर। दिल्ली आना नहीं चाहते थे, इसलिए एक छोटा सा कमरा रख लिया था, जब तक जीवित थे तब तक के लिए। निशा को लगता था, कि अम्मा के जाने के बाद बिल्कुल अकेले पड़ गए होंगे बापूजी, लेकिन वहां पुराने परिचित के बीच उनका मन लगता था। दोनों चाचियां भी ध्यान रखती थी। दिल्ली में दोनों भाई बहन की गृहस्थी भी मजे से चल रही थी। रविवार को निशा और विवेक का भी कार्यक्रम बन पाया मेरठ जाने का। निशा के पति अमित एक व्यस्त डॉक्टर हैं, महीने की लाखों की कमाई है उनका इस तरह से छुट्टी लेकर निकलना बहुत मुश्किल है। मरीजों की बीमारी ना रविवार देखती है, ना सोमवार। विवेक की पत्नी रेनू कि अपनी जिंदगी है, उच्चवर्गीय परिवारों में उठना बैठना है, उसका इस तरह के छोटे-मोटे परिवारिक पछरो में परना, उसे पसंद नहीं। रास्ते भर निशा को लगा विवेक कुछ अनमाना गुमसुम सा बैठा है। वह बोली “इतना परेशान मत हो, ऐसी कोई चिंता की बात नहीं है, उम्र हो रही है, थोड़े कमजोर हो गए हैं, ठीक हो जाएंगे।”

विवेक झिझकते हुए बोला “अच्छा खासा चल रहा था, पता नहीं चाची जी को ऐसी क्या मुसीबत आ गई, दो-चार साल और रख लेते.....” अब तो मकानों के दाम आसमान छू रहे हैं, तब कितने कम पैसे में अपने नाम करवा लिया तीसरा हिस्सा।

निशा शांत करने की मनसा से बोली “ठीक है ना, उस समय जितने भाव थे बाजार में उस हिसाब से दे दिया, और बापूजी आखरी समय अपने बच्चों के साथ बिताएंगे तो उन्हें अच्छा लगेगा।”

विवेक उत्तेजित हो गया बोला “दीदी तेरे लिए यह सब कहना बहुत आसान है। तीन कमरों के फ्लैट में कहां रखूंगा उन्हें ? रेनू से किट किट रहेगी सो अलग, उसने तो साफ मना कर दिया है, वह बापूजी का कोई काम नहीं करेगी। वैसे तो दीदी आजकल लड़कियां हक मांगने में बड़ी जल्दी खड़ी हो जाती है, करने के नाम पर क्यों पीछे हट जाती है ? आजकल लड़कियों की शिक्षा और शादी के समय अच्छा खासा खर्च हो जाता है, तू क्यों नहीं ले जाती बापू जी को अपने घर? इतनी बड़ी कोठी है, जीजा जी की लाखों की कमाई है।”

निशा को विवेक का इस तरह बोलना ठीक नहीं लगा, पैसे लेते समय कैसे वादा कर रहा था बापूजी से, आपको किसी भी वस्तु की आवश्यकता हो आप निसंकोच फोन कर देना, मैं तुरंत लेकर आऊंगा। बस इस समय हाथ थोड़ा तंग है, नाम मात्र पैसे छोड़े थे बाबूजी के पास, और फिर कभी फटका भी नहीं उसकी सुध लेने। निशा “तू चिंता ना कर, मैं ले जाऊंगी बापूजी को अपने घर पर, सही है उसे क्या परेशानी इतना बड़ा घर, फिर पति रात दिन मरीजों की सेवा करते हैं, एक पिता तुल्य ससुर को आश्रय तो दे ही सकते हैं।”

बापूजी को देखकर उसकी आंखें भर आई, इतने दुबले और बेबस दिख रहे थे, गले लगते हुए बोली “पहले फोन करवा देते, पहले लेने आ जाती।” बापू बोले “तुम्हारी अपनी जिंदगी है, क्या परेशान करना ? वैसे भी दिल्ली में बिल्कुल तुम लोगों पर आश्रित हो जाऊंगा।”

रात को डॉक्टर साहब बहुत देर से आए, तब तक पिता और बच्चे सो चुके थे। खाना खाने के बाद सुकून से बैठते हुए निशा ने डॉक्टर साहब से कहा “बापू जी को मैं यहां ले आई हूं। विवेक का घर बहुत छोटा है, उसे उन्हें रखने में थोड़ी परेशानी होती।”

अमित के एकदम तेवर बदल गए वह सख्त लहजे में बोला “यहां ले आई हूं से क्या मतलब है तुम्हारा ? तुम्हारे पिताजी तुम्हारे भाई की जिम्मेदारी है। मैंने बड़ा घर वृद्धाश्रम खोलने के लिए नहीं लिया था, अपने रहने के लिए लिया हूं। जायदाद के पैसे हड़पते समय नहीं सोचा था साले साहब ने, कि पिता की सेवा भी करनी पड़ेगी। रात दिन करके पैसे कमाता हूं, फालतू लुटाने के लिए नहीं है मेरे पास।”

पति के इस रूप से अनभिज्ञ थी निशा “रात दिन मरीजों की सेवा करते हो मेरे पिता के लिए क्या आपके घर और दिल में इतना सा स्थान भी नहीं है ?”

अमित की चेहरे की नसें तनी हुई थी वह लगभग चीखते हुए बोला “मरीज बीमार पड़ता है, पैसे देता है ठीक होने के लिए, मैं इलाज करता हूं, पैसे लेता हूं। यह व्यापारिक समझौता है, इसमें सेवा जैसा कुछ नहीं। यह मेरा काम है, मेरी रोजी-रोटी है। बेहतर होगा तुम एक-दो दिन में अपने पिता को विवेक के घर पर छोड़ आओ।”

निशा को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था, जिस पति की वह इतनी इज्जत करती है, वह ऐसा बोल सकते हैं। क्यों उसने अपने भाई और पति पर इतना विश्वास किया? क्यों उसने शुरू से ही एक-एक पैसे का हिसाब नहीं रखा? अच्छी खासी नौकरी करती थी, पहले पुत्र के जन्म पर अमित ने यह कह कर छुड़वा दी कि मैं इतना कमाता हूँ तुम्हें नौकरी करने की क्या आवश्यकता है? तुम्हें किसी चीज की कमी नहीं रहेगी, आराम से घर रहकर बच्चे की देखभाल करो। आज अगर नौकरी कर रही होती तो अलग से कुछ पैसे होते उसके पास या दस साल से घर में सारा दिन काम करने के बदले में पैसे की मांग करती तो इतने तो हो ही जाते कि बापू जी की देखभाल अपने दम पर कर पाती। कहने को तो हर महीने बैंक में उसके नाम के खाते में पैसे जमा होते हैं लेकिन, उन्हें खर्च करने की बिना पूछे उसे इजाजत नहीं थी। भाई से भी मन कर रहा था, कह दे शादी में जो खर्च हुआ था, वह निकाल कर जो बचता है उसका आधा-आधा कर दे। कम से कम पिता इज्जत से तो जी पाएंगे। पति और भाई दोनों को पंक्ति में खड़ा करके बहुत से सवाल करने का मन कर रहा था। जानती थी जवाब कुछ ना कुछ तो अवश्य होंगे लेकिन इस सवाल जवाब में रिश्तो की परतें दर परतें उखड़ जाएंगी और नग्नता सामने आएगी, उसके बाद रिश्ते दोनों मुश्किल हो जाएंगे। सामने तस्वीर में से झांकती दो जोड़ी आंखें जीवा पर ताला डाल रही थी।

अगले दिन अमित के अस्पताल जाने के बाद जब नाश्ता लेकर निशा बापू जी के पास पहुंचती है तो वह सामान बांधे थे, उबासी भरे स्वर में बोले “मेरे कारण अपनी गृहस्थी मत खराब कर। पता नहीं कितने दिन है मेरे पास, कितने नहीं। मैंने इस वृद्धाश्रम में बात कर ली है, जितने मेरे पास पैसे हैं, उसमें मुझे वे लोग रखने को तैयार हैं। यह ले पता तू मुझे वहां छोड़ और निश्चित होकर अपनी गृहस्थी संभाल।”

निशा समझ गई बापूजी की देह कमजोर हो गई है, दिमाग नहीं। दमाद काम पर जाने से पहले मिलने भी नहीं आया, साफ बात है ससुर का आना उसे अच्छा नहीं लगा। क्या सफाई देती? चुपचाप बेबसी बुलाकर उनके दिए पते पर उन्हें छोड़ने चल दी। नज़रें नहीं मिला पा रही थी, कुछ ना बोलते बन रहा था। बापू जी ने हाथ दबाते हुए कहा “परेशान मत हो बिटिया, परिस्थितियों पर कब हमारा बस चलता है। मैं यहां अपने हम उम्र लोगों के बीच खुश रहूंगा।”

तीन दिन हो गए थे बापूजी को वृद्धाश्रम छोड़े हुए। निशा का ना किसी से बोलने का मन कर रहा था, ना कुछ खाने का। फोन करके पूछने की भी हिम्मत नहीं हो रही थी कि, वह कैसे हैं? इतनी ग्लानि हो रही थी कि, किस मुंह से पूछें?

वृद्धाश्रम से ही फोन आ गया कि बापू जी अब इस दुनिया में नहीं रहे। दस बजे थे बच्चे पिकनिक पर गए थे आठ-नौ बजे तक आएंगे। अमित तो आते ही दस बजे तक हैं। किसी की दिनचर्या पर कोई असर नहीं पड़ेगा, किसी को सूचना भी क्या देना, विवेक ऑफिस चला गया होगा, बेकार छुट्टी लेनी पड़ेगी, रास्ते भर अविरल अश्रु धारा बहाती रही कहना मुश्किल था कि पिता के जाने का गम या अपनी बेबसी पर आखरी समय पर पिता के लिए कुछ नहीं कर

पाई। तीन दिन केवल तीन दिन अमित ने उसके पिता को मान और आश्रय दे दिया होता तो वह हृदय से अमित को परमेश्वर मान लेती।

वृद्धाश्रम के संचालक महोदय के साथ मिलकर उसने औपचारिकताएं पूर्ण की। वह बोल रहे थे इनके बहू, बेटे और दामाद भी हैं, रिकॉर्ड के हिसाब से। उनको भी सूचना दे देते तो अच्छा रहता। वह कुछ संभल चुकी थी बोली “नहीं इनका कोई नहीं है, ना बहू, ना बेटा और ना दमाद, बस एक बेटी है, वह भी नाम के लिए।” संचालक महोदय अपनी ही धुन में बोल रहे थे “परिवार वालों को सांत्वना और बापू जी की आत्मा को शांति मिले।”

निशा सोच रही थी “बापू जी की आत्मा को शांति मिल ही गई होगी। जाने से पहले सबसे मोह भंग हो गया था। समझ गए होंगे कोई किसी का नहीं होता फिर क्यों आत्मा अशांत होगी।”

हां परमात्मा उसको इतनी शक्ति दे कि, किसी तरह वह बहन और पत्नी का रिश्ता निभा सके।



चुटकले



वी. राधा
सहायक पर्यवेक्षक

शॉपिंग मॉल में चॉकलेट चोरी करते हुए एक महिला पकड़ी गयी और फिर.....

जज - आपने चोकलेट का एक पैकेट चुराया, जिसमे 30 चॉकलेट थे, इसके लिए आपको 30 दिनों की सजा सुनाई जाती है।

महिला का पति तुरंत बोले - जज साहब मेरी पत्नी सूजी का पैकेट भी चुराई है।

जज बेहोश -----कितनी सजा दे !



महिला: डॉक्टर मैं बहुत परेशान हूँ। मेरे पति को नई बीमारी है !

डॉक्टर पति से पूछे : क्या समस्या है ?

पति : डॉक्टर मुझे -----

महिला : आप चुप रहिए। ये नींद में बातें करने लगे हैं। क्या करूँ ?

डॉक्टर :मेडम एक इलाज है ,लेकिन आप से वह करना मुश्किल है।

महिला : ऐसा मत कहिये डॉक्टर ,मैं इनके लिए कुछ भी कर सकती हूँ !!!

डॉक्टर : आप सिर्फ बात काम करके ,उन्हें दिन में बोलने का मौका दीजिये। !!!

टीचर बताओ बच्चो ,संसार का सबसे पुराना जानवर क्या है ?

राजेश: जेबरा, सर

टीचर : वो कैसे ?

राजेश : वो ब्लैक & व्हाइट है न सर इसलिए।

टीचर : क्या। .!!!!!!!

एक महिला के पास फोन आया। ...

क्या आप "गौरव की माँ है " ?

जी हाँ

आपका बेटा हमारे पास है , 25000 रूपये लेके आइये -----

में पुलिस को फोन करती हूँ !

मेडम , हम पुलिस ही बोल रहे हैं , आपके बेटे का अपहरण नहीं चालान हुआ है !!!!!

पिताजी पढ़ेगा नहीं तो क्या करेगा .?

बेटा : बस चलाऊंगा, फिर अपनी बस लूंगा , आम के बैग खरीदूंगा , बीवी को पढ़ाऊंगा , उसे कलेक्टर बनाऊंगा ,आप के नाम पर अस्पताल खोलूंगा।

पिताजी ने लाठी निकली और बोले -----तूने आज फिर सूर्यवंशम " सिनेमा देखी है -----.



योग



वी. एम. बिंदु
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

योग अभ्यास का एक बहुत ही पुराना रूप है, जो कि भारतीय लोगों के द्वारा हजारों वर्ष पहले ही विकसित हो चुका था। हजारों वर्षों के बाद से लगातार योग का अभ्यास किया जा रहा है। योग एक प्रकार का व्यायाम होता है, जिसे किसी भी व्यक्ति को सेहतमंद रहने के लिए और विभिन्न रोग एवं अक्षमताओं से छुटकारा प्राप्त करने के लिए बताया जाता है। योग ध्यान लगाने की एक बहुत ही मजबूत विधि है, जो हमारे मन एवं शरीर को काफी आराम देती है।

संपूर्ण विश्व भर में वर्तमान समय में योग विकसित हो चुका है और लोग खुद को स्वस्थ रखने के लिए योग भी करते हैं। योग को मॉडर्न युग में मेडिटेशन कहा जा रहा है। एक सर्वेक्षण के मुताबिक संपूर्ण विश्व में लगभग 2 अरब लोग योग का अभ्यास करते हैं। मानव शरीर मन एवं आत्मा को शांत रखने के लिए योग काफी मददगार सिद्ध होता है, इतना ही नहीं योग करने से हमारी शारीरिक नियंत्रित होने के साथ साथ हमारे मानसिक अनुशासन के नियंत्रण क्षमता भी बढ़ती जाती है।

हमारे जीवन में योग का काफी महत्व है, योग करके हम अपने जीवन के सभी तनाव को कम कर सकते हैं। वर्तमान समय में तनाव का कोई भी कारण नहीं है, लोग वर्तमान समय में काफी डिप्रेशन में रहते हैं, यदि ऐसे लोग मेडिटेशन अर्थात् योग करते हैं, तो यह उनके लिए काफी लाभदायक सिद्ध हो सकता है। तनाव के कारण लोगों को सोते समय सिर में दर्द, गर्दन में दर्द, पीठ में दर्द इत्यादि जैसी काफी भयंकर बीमारियां हो सकती हैं। योग ऐसी बीमारियों को दूर करने के लिए काफी कारगर सिद्ध हो रहा है। नियमित रूप से योग करने से हमारे शरीर को बहुत से लाभ प्राप्त होते हैं, इन लाभों को बुलेट प्वाइंट के द्वारा नीचे दर्शाया गया है।

- योग हमारे शरीर के आसन एवं एलाइनमेंट को ठीक कर देता है।
- योग करने से हमारे सभी आंतरिक अंग मजबूत रहते हैं।

- नियमित रूप से योग करने से अस्थमा के मरीज में काफी सुधार देखने को मिल सकता है।
- योग करके कोई भी डायबिटीज का पेशेंट अपने डायबिटीज को कम कर सकता है।
- योग करने से लचीली मांस पेशियों में सुधार आ जाता है।
- योग के द्वारा दिल से संबंधित समस्याओं का इलाज किया जा सकता है।
- योग करने से हमारा शरीर चिंता तनाव एवं अवसाद इत्यादि से मुक्त रहता है।
- हमारे शरीर को एकाग्र चित्त करने में काफी सहायता मिलती है।
- योग करने की वजह से बड़े हुए वजन वाले लोग अपने वजन को कम करसकते हैं।
- योग करने की वजह से शक्ति और सहनशक्ति को बढ़ावा मिलता है।
- योग करने की वजह से हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ जाती है





आईएनएस विक्रांत

जी संगीता

व.लेप./प्रशासन

'आईएनएस विक्रांत' का नाम भारतीय नौसेना के पूर्ववर्ती पोत विक्रांत के नाम पर रखा गया है, जिसने 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में अहम भूमिका निभाई थी। 31 जनवरी 1997 को नेवी से आईएनएस विक्रांत को सेवा मुक्त (रिटायर) कर दिया गया। अब तकरीबन 25 साल बाद एक बार फिर से आईएनएस विक्रांत का पुनर्जन्म हो रहा है। 2 सितम्बर 2022 को इस नए विमानवाहक पोत का जलावतरण हुआ।

इस पोत का डिज़ाइन नौसेना के वॉरशिप डिज़ाइन ब्यूरो ने तैयार किया है। इस पोत पर आसानी से 30 विमानों का संचालन किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने अपने सम्बोधन में कहा, "विक्रांत बड़ा और भव्य है, विक्रांत अलग है, विक्रांत विशेष है। विक्रांत सिर्फ एक युद्धपोत नहीं है, यह 21वीं सदी के भारत की कड़ी मेहनत, प्रतिभा, प्रभाव और प्रतिबद्धता का प्रमाण है। आज यहाँ केरल के समुद्री तट पर भारत, हर भारतवासी, एक नए भविष्य के सूर्योदय का साक्षी बन रहा है। आईएनएस विक्रांत पर हो रहा ये आयोजन विश्व क्षितिज पर भारत के बुलंद होते हौसलों की हुंकार है। "

आईएनएस विक्रांत की खासियत

आईएनएस विक्रांत 40 हजार टन वजन वाला विमान वाहक जहाज है। यह एयरक्राफ्ट कैरियर समुद्र के ऊपर तैरता एक एयरफोर्स स्टेशन है, जहाँ से फाइटर जेट्स, मिसाइलें, ड्रोन के जरिये दुश्मनों के नापाक मंसूबों को नेस्तनाबूत किया जा सकता है।

दुनिया में केवल अमेरिका, रूस, ब्रिटेन और फ्रांस के पास ही 40 हजार और इससे ज्यादा वजनवाले विमानवाहक जहाज का निर्माण करने की क्षमता है। आईएनएस विक्रांत से 32 बराक- 8 मिसाइल दागी जा सकेंगी।

आईएनएस विक्रांत 20 मिग-29 लड़ाकू विमान और दस हेलीकॉप्टरों को ले जाने में सक्षम है। इस पर 30 एयरक्राफ्ट तैनात होंगे, जिनमें 20 लड़ाकू विमान होंगे और 10 हेलीकॉप्टर होंगे। इस साल नवंबर के महीने से मिग -29 के फाइटर जेट विक्रांत पर तैनात होने शुरू हो जाएँगे।

आईएनएस विक्रांत 262 मीटर लम्बा और 62 मीटर चौड़ा है, जिसके फ्लाइट डेक दो फुटबॉल मैदानों से बड़े हैं। यह विमानवाहक पोत पूरी तरह से लोड होने पर लगभग 43,000 टन विस्थापित करता है। यह 28 समुद्री मील की अधिकतम डिज़ाइन गति के साथ एक बार में

7,500 समुद्री मील की दूरी तय कर सकता है, जो लगभग 14,000 किलोमीटर के बराबर है। इस 18 मंजिल ऊँचे एयरक्राफ्ट कैरियर करीब 2,400 कम्पार्टमेंट हैं, जिनमें 1,600 लोगों के रहने के लिए डिज़ाइन किया गया है, इसमें महिला अधिकारियों और नाविकों के लिए विशेष केबिन भी हैं। इसके एविएशन हैंगर में लगभग 20 विमान रह सकते हैं।

विक्रांत को लगभग 20,000 करोड़ रुपये की लागत से बनाया गया है। नौसेना ने कहा है कि लगभग 80 से 85% रकम भारतीय अर्थव्यवस्था में लगी है, इसमें 76% स्वदेशी सामग्री का उपयोग किया गया है। नौसेना के मुताबिक आईएनएस विक्रांत पर उड़ान परीक्षण नवंबर तक शुरू होने वाला है और एयरक्राफ्ट कैरियर 2023 के मध्य में पूरी क्षमता से चालू होने की उम्मीद है।





स्वतंत्र एवं विकसित भारत

हेमन्त तालेपा
आशुलिपिक ग्रेड-II

हमारे देश और देशवासियों ने इस वर्ष स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ का उत्सव हर घर तिरंगा से बनाया। स्वतंत्रता दिवस के कुछ दिन पहले पूरे देश में तिरंगा लगाया गया और उन क्रांतिवीरो और स्वतंत्रता में अहम योगदान देने वाले स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित की, ये हमारे देश की एकता एवं अखंडता को प्रदर्शित करता है। जहां कदम-कदम पर धरती अपना रंग और लोगों की संस्कृति बदलती है ये 75 वर्ष की यात्रा कुछ सुखद तो कुछ दुखद रही है। स्वतंत्रता के पश्चात् अपना संविधान बनाकर लोकतंत्र की स्थापना करके और अभी तक बनाए रखना यह एक सुखद एवं गर्व की बात है। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत ने जिस तरह हर क्षेत्र में जो उपलब्धियां हासिल कीं, उसके परिणामस्वरूप आज पूरा विश्व भारत को देख रहा है। विज्ञान, तकनीक, रक्षा, संस्कृति, विकास योजनाएं, सामाजिक कल्याण इत्यादि में जो भी प्रगति हुई है वह इस देश के नागरिकों द्वारा साथ में काम करके प्राप्त हुई है।

75 वर्षों की यात्रा को 100 वर्षों तक ले जाने में भी इस देश के नागरिकों विशेषकर युवाओं का अहम योगदान होगा। लाल किले के प्राचीर से हमारे देश के प्रधानमंत्री जी का संकल्प कि भारत अब विकासशील नहीं विकसित देश बनेगा यह हमारे लिये मार्गदर्शक का कार्य करेगा। पांच संकल्प जो हमारे देश ने इस स्वतंत्रता दिवस पर लिए हैं, वह हैं- भारत को विकसित राष्ट्र बनाना, गुलामी के सोच से मुक्ति, अपनी विरासत पर गर्व, एकता और एकजुटता एवं नागरिक कर्तव्यों का बोध। देश वर्तमान समय में नई चुनौतियों का सामना कर रहा है तो कुछ चुनौतियां पहले से तैयार हैं भविष्य के लिये। कोरोना संक्रमण के कारण जो आर्थिक नुकसान हुआ है, देश को उसको पूरा करने में वक्त लगेगा परंतु इस बात का ध्यान रखना होगा कि हमारा देश आर्थिक कुचक्र में न फंस जाये। इतिहास एवं विश्व के अन्य देशों से प्रेरणा लेकर हम विकसित राष्ट्र बन सकते हैं क्योंकि भारत देश में वह क्षमता है और यह क्षमता इस देश के नागरिकों के कारण है।

हम अपने नागरिक कर्तव्यों का बोध करके इस देश को विकसित राष्ट्र बना सकते हैं। स्वास्थ्य शिक्षा, रोजगार, शहरों का विकास, ग्रामीण क्षेत्र की उन्नति. बेहतर सुविधाएं इत्यादि क्षेत्रों में योगदान हम अपने कार्य एवं नई विकसित सोच के साथ कर सकते हैं। निष्कर्ष स्वरूप आइये हम सब मिलकर स्वतंत्रता के 75 वर्षों की यात्रा को 100 वें वर्ष तक ले जाने में उसी प्रकार एक साथ मिलकर कार्य करें जिस प्रकार हम स्वतंत्रता के पश्चात् वर्तमान समय तक करते आए हैं। एक नई उमंग नई ऊर्जा के साथ इस पथ यात्रा पर देश को आगे बढ़ाते हुये जो

सपना हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने देखा था एक विकसित, स्वतंत्र, सम्प्रभु राष्ट्र का उसे साकारित कर हम उन्हें अपनी श्रद्धांजलि और बेहतर तरीके से समर्पित कर पायेंगे

“जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।

वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।”

“जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।

वह नर नहीं, नरपशु निरा है और मृतक समान है।”

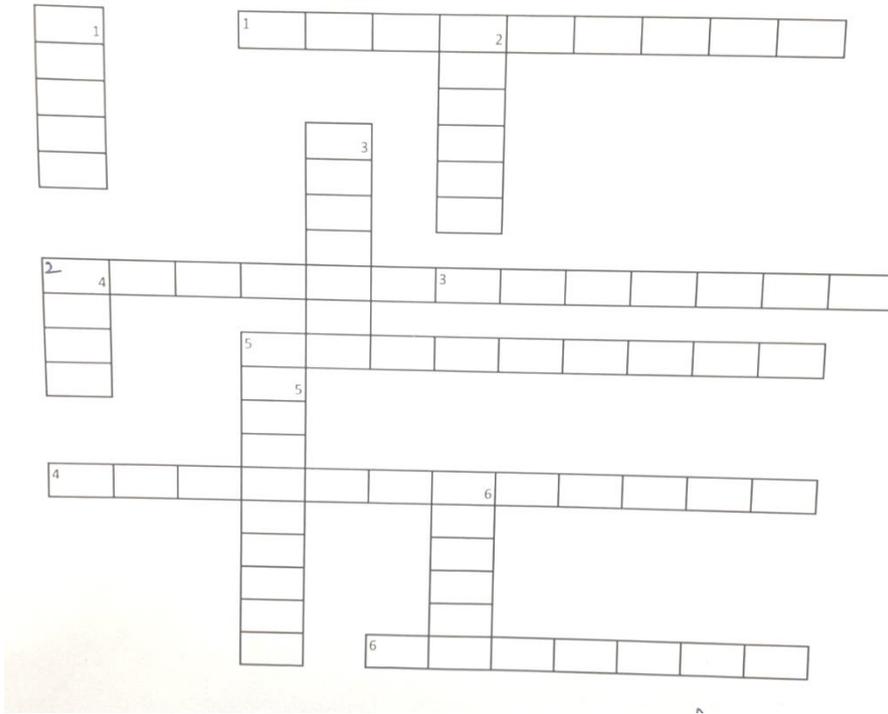




पहेली

टी. विद्या देवी
सहायक पर्यवेक्षक

भारत के स्वंत्रता सेनानियों के नाम नीचे दिए गए हैं सुराग के माध्यम से पहचान करिये



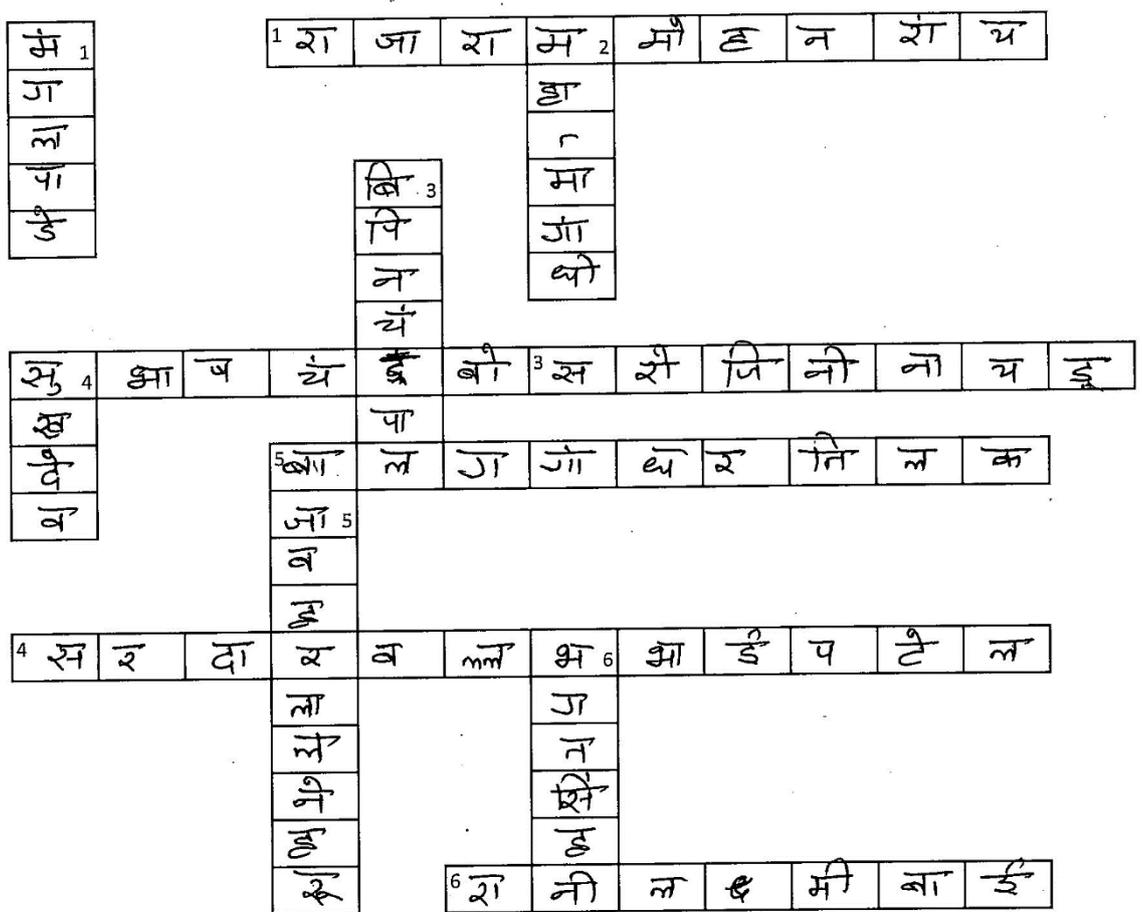
बांये से दांये

1. सती और बाल विवाह
2. आजाद हिन्द फ़ौज
3. INC के पहले प्रेसिडेंट
4. लौह पुरुष
5. स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार
6. झांसी की रानी

ऊपर से नीचे --

1. स्वाधीनता संग्राम के महत्वपूर्ण सैनिक
2. राष्ट्रपिता
3. क्रांतिकारी विचार
4. राजगुरु के साथ फांसी पर लटका दिया था
5. भारत के प्रमुख प्रधानमंत्री
6. चार को देखें

उत्तर-





नए भारत की कल्पना

अभिषेक

कनिष्ठ अनुवादक

सभी लोगो के सपनों की उड़ान के साथ नए भारत की कल्पना की है। भारत ने कई क्षेत्रों में विकास की राह पकड़ ली है। हम भारत के सर्वगीण विकास के साथ आगे बढ़ रहे हैं। फिर भी नए भारत की हम कल्पना करते हैं तो कई क्षेत्रों में सुधार की, आधुनिकता की, पारदर्शिता की और सांस्कृतिक विकास की ओर कई मुद्दे हैं जो हमारे नए भारत में साकार होने आवश्यक है।

शिक्षा

मैं चाहता हूँ कि मेरा नया भारत ऐसा हो जिसमें सभी लोग शिक्षित हों। भारत की शिक्षा व्यवस्था में सुधार होगा। भारत की शिक्षा व्यवस्था में आधुनिक एवं नए विषयों को जोड़कर आने वाले समय में सुधार किया जा सकता है। इससे लोग आधुनिक ज्ञान सीखकर अपने देश के सभी क्षेत्रों में योगदान देंगे।

रोजगार

मेरी कल्पना के नए भारत में कोई भी योग्य व्यक्ति बेरोजगार नहीं होगा। भारत में नए उद्योगों एवं नए संस्थानों की स्थापना करके तथा नई परियोजनाओं पर कार्य करके भारत में नए रोजगारों के अवसर लाये जा सकते हैं। मैं चाहता हूँ कि भारत का हर क्षेत्र इतना विकसित हो जाये कि व्यक्ति को अपना देश और न ही अपना प्रदेश छोड़कर बाहर जाना पड़े।

तकनीकी विकास

मेरा मानना है कि आने वाले वर्षों के नए भारत में तकनीकी विकास की दर इतनी तेजी से बढ़ेगी कि भारत दूसरे देशों से हर क्षेत्र में मुकाबला कर पायेगा। तकनीकी विकास के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकसित होना जरूरी है। भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए नए उपकरण प्रदान कर तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शिक्षा को बढ़ावा देकर भारत के तकनीकी विकास की दर तेजी से बढ़ाई जा सकती है।

जाति एवं धार्मिक मुद्दे

मेरी कल्पना के भारत में सभी भाईचारे से रहेंगे तथा सभी को समान अवसर प्रदान होंगे। चूंकि मेरा मानना है कि शिक्षा से सोचने एवं समझने की क्षमता बढ़ती है इसीलिए शिक्षा के माध्यम से जाति एवं धार्मिक मुद्दों को पूरी तरह से खत्म किया जा सकता है।

मेरे प्यारे पिताजी



श्रीमती राधा वी.
सहायक पर्यवेक्षक

एक स्व-निर्मित व्यक्ति ,ज्ञान का सागर थे।
हजारों को शिक्षा प्रदान की और सशक्त बनाया राष्ट्र को।

एक ईमानदार व्यक्ति ,समानता के लिए लड़े।
महिलाओं का सम्मान किया और तोड़ा कई सामाजिक वर्जनाओं को।।

एक साधारण व्यक्ति,उत्साही पुस्तक -प्रेमी थे ,
दोस्तों के लिए कभी भी और, न्याय के लिए कुछ भी।

एक पारवारिक व्यक्ति , पत्नी से बहुत प्यार करते थे।
अच्छी तरह से पाला बच्चों को और, लक्ष्यों तक पहुंचने में मदद की।

एक विनम्र व्यक्ति , नेक जीवन जिए थे।
अपनी आंखे दान दी और, रोशन किया दो जिंदगियों को

एक सम्मानीय पिता, गर्व है आपकी बेटी होने पर।
मुझे आत्मविश्वशी बनाया और, अब मैं गरिमा के साथ खड़ी हूँ।



व्यायाम करना जरूरी है।

वी. सविता
रोकड़िया /दावा

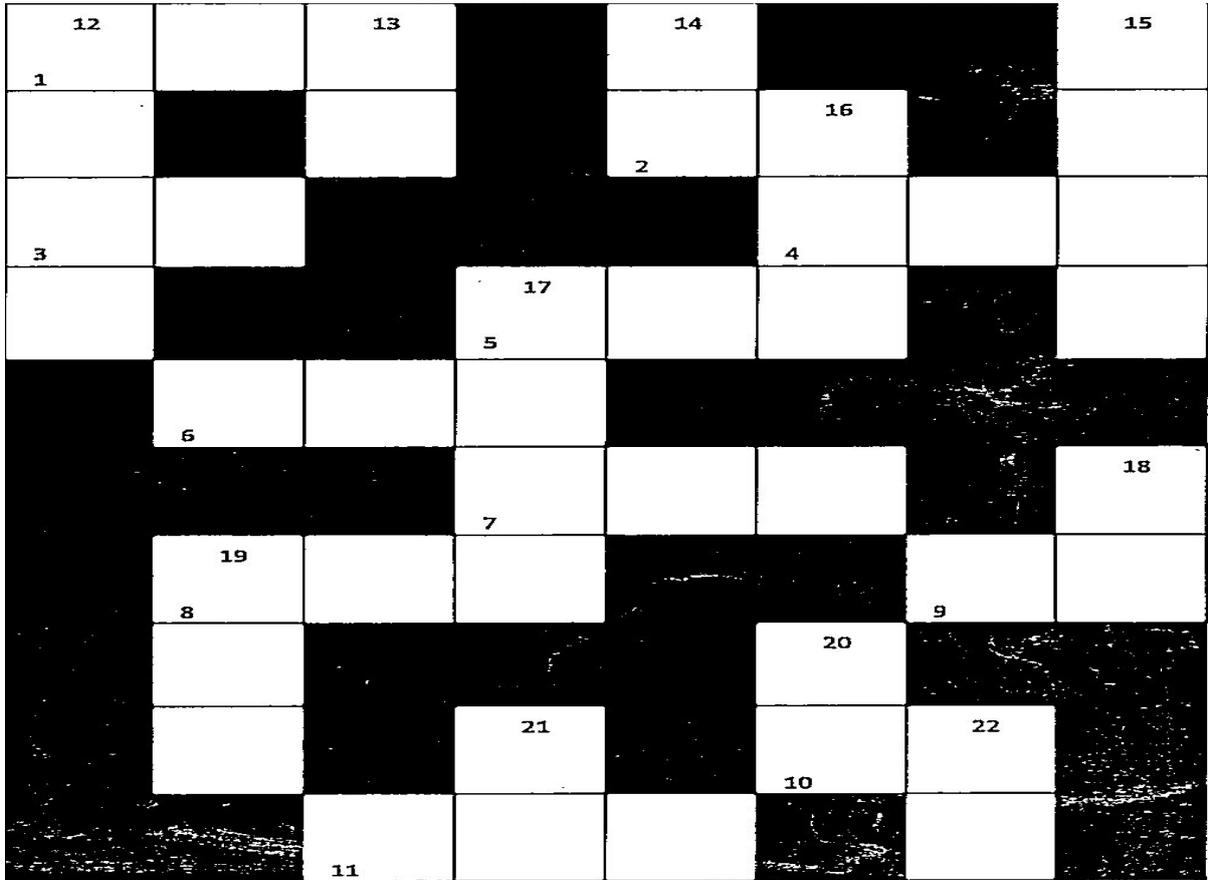
रोज शारीरिक गतिविधि या व्यायाम करने से जीवन स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। हर दिन तीस मिनट से एक घंटे तक व्यायाम करना, हमारे सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है। व्यायाम करना मतलब जिम जाना नहीं होता है, घर के कामों में व्यस्त होना भी एक तरह का व्यायाम या शारीरिक गतिविधि करने का समान है। घर के काम जैसे झाड़ू-पोछा लगाना भी एक तरह का व्यायाम ही है। रोज तीस से चालीस मिनट तक पैदल चलना दस से पंद्रह मिनट तक दौड़ना पचास बार रस्सी कूदना आदि व्यायाम करना है। व्यायाम करने से हड्डियां मजबूत और स्वस्थ हो जाती है और जोड़ों का दर्द कम हो जाता है। व्यायाम के द्वारा हमारे शारीरिक वजन को भी कम किया जा सकता है, साथ ही इससे हमें मोटापा जैसी बीमारी से मुक्ति प्राप्त हो सकती है। रोज साइकिल चलाने से श्वसन स्वास्थ्य बढ़ता है, जिससे सांस लेने में दिक्कत नहीं होगी। योगा करना भी एक तरह का व्यायाम है। योगा करने से हमारा हृदय स्वस्थ रहता है और तनाव को कम करने में मदद करता है। योगा और व्यायाम करने से नींद से जुड़ी हुई बीमारियों को भी कम किया जा सकता है और योगा करने से अच्छी नींद भी आती है। व्यायाम करना जीवन में सबसे ज्यादा जरूरी है इसलिए रोज व्यायाम करो ! और अपने जीवन को रौनक करो!



पहेली

श्रीमती राधा वी.
सहायक पर्यवेक्षक

सुराग : कहावतों को पूरा करें ..



बांये से दांये :-

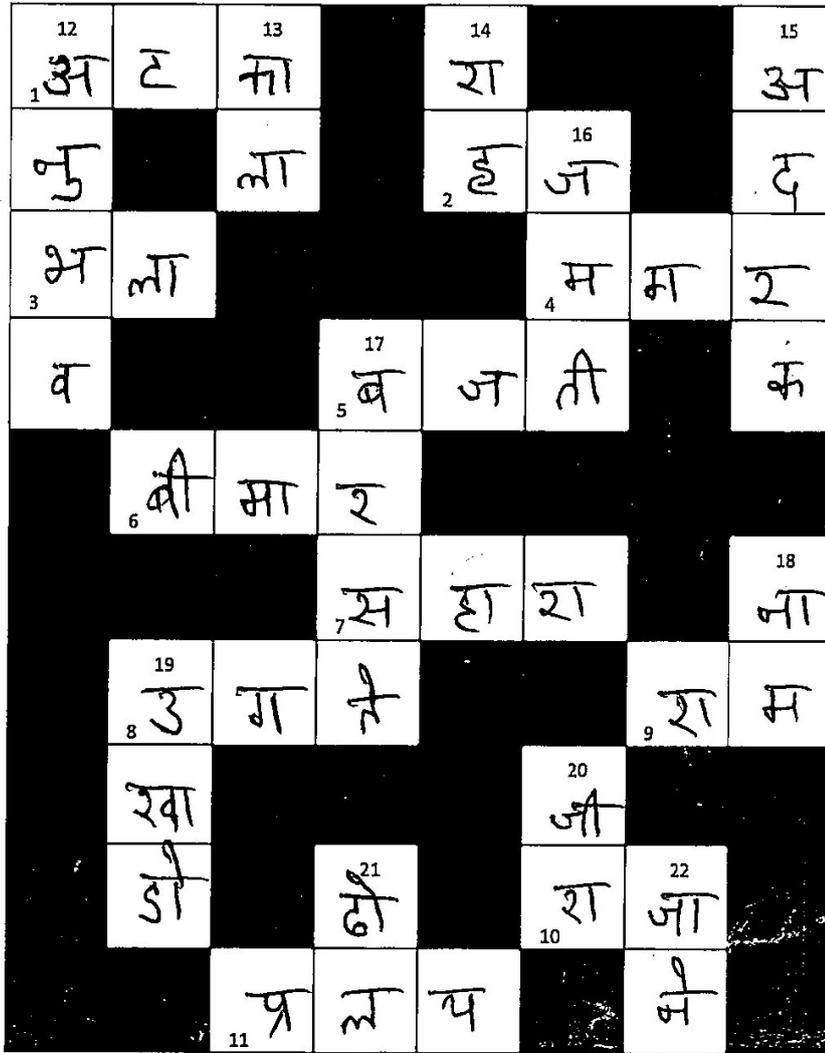
1. आसमान से गिरा खजूर में -----().
2. नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली चली -----को()
3. अंत भला तो सब -----()
4. जल में रहकर -----से वैर ठीक नहीं()

5. एक हाथ से ताली नहीं -----()
6. एक अनार सौ -----()
7. पैसे पेड़ पर नहीं -----()
8. मुँह में -----बगल में छुरी()
9. अंधों में काना -----()
- 10.आप मरे जग -----()

ऊपर से नीचे :-

- 11.----- सारे ज्ञान की जननी है()
- 12.दाल में -----()
- 13.जहाँ छह , वहाँ -----()
- 14.बन्दर क्या जाने ---का स्वाद ()
- 15.हथेली पर सरसों नहीं.....()
- 16.जो गरजते है वो नहीं()
- 17.वीरता काम न चाहे()
- 18.गड़े मुर्दे मत()
- 19.ऊट के मुँह में जीरा()
- 20.दूर.....के सुहावने()
- 21.जिसका दुःख वही.....()

उत्तर





सफल जीवन का रहस्य

वी. चित्रा
हिंदी अधिकारी

“डॉस फर्स्ट” नामक पुस्तक में सम्मिलित कई विद्वानों के दस आदेश ट्विटर साइट में साझा किया गया है उनका संक्षिप्त अंश नीचे दिए गए हैं-

1. हर दिन एक घंटा पढ़ाई के लिए समय निकाल लीजिए 24 घंटे में से 4% अर्थात एक घंटा पुस्तक पढ़ने में बिताएंगे तो अपने कार्यालय काम या अपने इच्छुक विभाग में दस वर्ष तक चरम पर पहुँच सकते हैं।
2. सामान्यतया जब कोई अन्य व्यक्ति बात कर रहे हैं तो उस पर पूरा ध्यान दीजिए। ज्यादातर लोग कभी ध्यान नहीं देते।
3. आवश्यकता पड़ने के अलावा, जरूरत से कम बात कीजिए। जब आप अपनी बातों से दूसरों का ध्यान अकर्षित करना चाहते हैं तब साधारणतया नियंत्रण नहीं रहता है इसलिए ज्यादा बोलने बचकर कम बोलें और पूरे मन से काम में दिखाएं।
4. चुनौतीपूर्ण समय पर आप किसी बिंदु पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकते। इसका यह अर्थ नहीं कि उसके पृष्ठभूमि में कुछ नहीं है।
5. तीन नियमों को क्रियान्वित करें- आप जिस जगह पर रहते हैं आपके पास जितना है उसे रखकर आपसे जितना हो सकता है वह करें।
6. हमारे पास रहने वाला सबसे श्रेष्ठ ताकतवर संपत्ति हमारा ज्ञान मात्र है। यदि हम उसको उचित प्रशिक्षण देते हैं तो अतुलनीय संपत्तियों को प्राप्त कर सकते हैं।
7. एक दिन के पहले ही योजना बनाएँ। योजना बनाना भविष्यकाल को वर्तमानकाल कार्य में लाने की कला है इसलिए कल जो करना है उसे अब से योजना बनाकर करना शुरू करें ।

इस संबंध में कबीरदास जी की यह दोहा चिंतन योग्य है-

“काल करे सो आज कर
आज करे सो अब
पल में प्रलय होगी
बहुरी करेगा कब”

8. कार्यालय काम की बात जब आती है तब यह देखा जाएगा कि कितने समय में कितनी अच्छी तरह पूरा किया इसकी गणना की जाएगी। वहीं जब घर की बात आती है तब आपने कितना अधिक समय परिवार वालों के साथ बिताया उसके अनुसार मूल्यांकन किया जाएगा जब काम की बात आती है तब काम के लिए और जब घर की बात आती है तो परिवार के लिए समय आवंटित करें।
9. यदि आप का एकमात्र लक्ष्य अमीर बनना है तो कभी भी आप इसे प्राप्त नहीं कर सकते।
10. आप जब तक निर्णय नहीं लेंगे तब तक उत्तर नहीं के बराबर ही होगा।





श्री संतोष चौधरी
स. लेप. अधिकारी

दो दिन “ऐलागिरी का टूर”

याद रहेगा यह दो दिन,
बीत गया जाने कैसे,
सरपट भाग गया यह दिन।
कार्यालय से सीखा एक नया अनुभव,
एक नहीं, दो नहीं, चार और पाँच नहीं,
पूरे के पूरे सौ से ज्यादा थे॥

चाहे उम्र हो पच्चीस या पचास,
लगते सब एक जैसे थे।
साथ में बूढ़े और बच्चे भी थे,
निकल पड़े थे दो दिन लेकर।
धूम मचाया दो दिन,
सबने जाना एक दूसरे को॥

नयी - नयी पहचान बनायी,
घूम - घूम कर सबने,
भुला बचपन फिर से जिया।
कार्यालय के कामों में खो गया था, जो बचपन
याद फिर से वह आया॥
ऐलागिरी की हरियाली ने,
मन को खूब लुभाया,
याद हमें रहेगा, सदा ऐलागिरी का टूर
इसे न कोई जाए भूल।
इस लिए कहे संतोष,
हर वर्ष हमें दो दिन देने हैं।
स्वयं और अपनों के लिए,
इसे न जाना भैया तुम सब भूल।
याद रहेगा यह दो दिन,
ऐलागिरी का टूर॥



रसीदी टिकट

संजीव कुमार गिरी
डी.ई.ओ.

पुस्तक रसीदी टिकट का समीक्षा लिखते समय मन में यह खयाल आया की यह पुस्तक तो स्वयं में अमृता प्रितम जी के संपूर्ण जीवन और मुख्य कृति की समीक्षा है। ऐसा हम इसलिए कह रहे हैं क्योंकि रसीदी टिकट में वह स्वयं अपने जीवन के घटनाओं के अलावे अपने कृति और उनके पात्रों की चर्चा के साथ-साथ उसके मुख्य अंश को भी शामिल किया है।

अमृता प्रितम का जन्म 31 अगस्त 1919 को और मृत्यू 31 अक्टूबर 2005 में हुआ। 20वीं शताब्दी की वह पहली स्थापित पंजाबी लेखिका, उपनयास्कार और कावित्री मानी जाती है। अपने 6 दशकों से भी अधिक लेखन यात्रा में उन्होंने 100 से ज्यादा कृतियों की रचना की जिसमें कविता, लेख, उपन्यास और आत्मकथा शामिल है। उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया जिसमें साहित्य अकादमी, ज्ञानपीठ और पद्म विभूषण इत्यादि है। वह स्वभावतः एक विद्रोही और संजीदा लेखिका थी शायद इसलिए उनके कई रचनाओं पर विवाद होता रहा।

रसीदी टिकट अमृता प्रितम की बहुचर्चित आत्मकथा है जिसमें डायरी संस्मरण, कविताएं, स्वप्न और जिंदगी के खट्टे-मिठे यथार्थ का मिश्रण है जिसे पढ़ के हम एक नए शख्सियत से रूबरू होते हैं।

अध्यापन करने वाले मां-बाप की यह संतान मां राज बीबी और पिता नंद साधु को याद करते हुए अपने चरित्र का आधार भी खोलती है। चरित्र, जो बरतनों को हिंदू-मुस्लमान होने से रोकता है, जो कवि पिता के इस आदेश को मानने से इंकार कर देती है कि केवल धार्मिक कविताएं उसे लिखनी चाहिए जो दकियानूसी भावनाओं से परे जीना चाहती हो। यह आत्मकथा बताती है कि लेखिका को नफरत के दायरे पर दया आती है क्योंकि उसे देश के विभाजन ने बुरी तरह प्रभावित किया था। इसी का असर दिखा जो उन्होंने वारिश शाह जैसी कविता की रचना की। साहिर से करीबी और इमरोज से गहरी दोस्ती को अमृता प्रितम ने बेहद खुबसूरती और बेबाकी से पेश किया है। इस पुस्तक में साहिर से जुड़े कई किस्से हैं जिसमें एक प्रसंग अमृता का साहिर के लिए प्रेम की कशिंश को बयां करता है। वो लिखती है - जब साहिर उनसे मिलने उनके घर आया करते थे तो सिगरेट पीते रहते थे। आधी सुलगाई सिगरेट को वो

राखदान में डाल देते। साहिर के जाने के बाद अमृता उन सिगरेटों के टुकड़ों को संभालती और अकेले में उनको सुलगाया करती, इन सिगरेट को हाथ में लेकर उनको साहिर के स्पर्श का एहसास होता। उनको सिगरेट की लत भी यही से लगा।

अमृता प्रियम लिखती है कि उनके अनुसार लेखक दो प्रकार के होते हैं - एक जो लेखक होते हैं और दूसरे जो लेखक दिखना चाहते हैं। जो है, उनके लिए दिखने का यत्न उनकी आवश्यकता नहीं होती। इसलिए उन्हें दुनिया के सब सच्चे लेखक ककनूसी नस्ल के प्रतीत होते हैं। पुस्तक में उन्होंने बताया कि ककनूस पंक्षी चील की लंबाई- चौड़ाई का होता है। इसके पंख चमकीले और सुनहरे होते हैं इसके स्वर में सिगत होता है और यह सदा ही एक ही अकेला होता है। इसकी आयु 500 वर्ष होती है जैसे कुछ इतिहासकार इसकी आयु एक हजार चार सौ एकसठ वर्ष मानते हैं। इसकी आयु जब शेष होने लगती है तो यह सुगंधीत वृक्षों की टहनीया इक्ठ्ठी करके घोषला बनाता है और उसमें बैठ कर गाता है जिससे आग पैदा होती है और ये घोषले सहीत उसमें जल जाता है फिर उसके राख में से एक नया ककनूस जन्म लेता है जो सारी सुगंधीत राख को समेट कर सूरज के मंदीर की ओर जाता है यह राख सूरज के सामने चढ़ा देता है। जैसे ही सच्चे लेखक रचनात्मक क्रिया की आग में जलते हैं फिर अपनी राख में से रचना के रूप में जन्म लेते हैं। अमृता खुद को भी इसी नस्ल की लेखिका समझती थी।

पुस्तक के एक दिन शीर्षक में लेखिका बताती है कि वो भी एक दिन था जब मैंने अपनी बात विस्तार से लिखने के जगह सोचा था कभी जब मैं अपनी आत्मकथा लिखुंगी तो वो केवल 10 पंक्तियों में होगी और वे पंक्तियां कागज पर लिख कर रख लिया, वे पंक्तियां आज भी मेरे सामने हैं और आज भी उतनी ही सच हैं जितनी उस दिन लिखते समय थी। वे पंक्तियां हैं - मेरी सारी रचनाएँ क्या कविता, क्या कहानी और क्या उपन्यास मैं जानती हूँ एक नाजायज बच्चे की तरह हैं। मेरी दुनिया की हकीकत ने मेरे सपने से इश्क किया और उसके वर्जीत मेल से यह सब रचनाएँ पैदा हुईं, जानती हूँ क नाजायज बच्चे कि किस्मत इसकी किस्मत है और सारी उम्र अपने साहित्यिक समाज के माथे के बल भुगतने हैं। मन का सपना क्या था इसकी व्याख्या मैं जाने की आवश्यकता नहीं है, वो कमबख्त बहुत हसीन होगा---- निजी जिंदगी से लेकर कुल आलम की बेहतरी तक की बातें करता होगा। जब भी हकीकत अपनी औकाद को भूल कर उससे इश्क कर बैठी और जो रचना पैदा हुई हमेशा कुछ कागजों में लवारिश भटकती रही और आज भी मेरा यकिन है ये 10 पंक्तियां मेरी पूरी और लंबी आत्मकथा हैं।

रसीदी टिकट पुस्तक की कुछ खास -----।

- ❖ यूँ तो हर परछाई किसी काया की परछाई होती है ,काया की मोहताज , पर कई परछाइयां ऐसी भी होती ंकाया से भी स्वतंत्र। ,जो इस नियम के बाहर होती हैं ,
- ❖ दीवानेपन के अंतिम शिखर पर पैर रखकर खड़े नहीं रहा जा सकतापैरों पर बैठने के , लिए धरती का टुकड़ा चाहिए।
- ❖ दुखांत यह नहीं होता कि जिंदगी की लंबी डगर पर समाज के बंधन अपने कांटे बिखरते रहें और आपके पैरों में से सारी लहू बहता रहे। दुखांत यह होता है कि आप लहूलुहान पैरों से एक उस जगह पर खड़े हो जाएंजिसके आगे कोई रास्ता आपको , बुलावा न दे।
- ❖ तस्वीर चाहे किसी भी खास व्यक्ति की होवे ,जो अच्छे लगते हैं ,यह सवाल नहीं है , तस्वीरों में नहीं। ,हर समय खयालों में रहते हैं
- ❖ कुछ घटनाएं बहुत ही थोड़े समय के बाद रचना का अंग बन जाती हैंपर कुछ , घटनाओं को कलम तक पहुंचने के लिए बरसों का फासला तय करना पड़ता है।

इस पुस्तक का शीर्षक रसीदी टिकट लेखिका ने क्यू रखी इसका भी एक रोचक किस्सा है। दरसल बात यह हुई कि खुशवंत सिंह ने उनके उन्यास पिंजर का अंग्रेजी अनुवाद किया और बदले में उनके और साहिर के बारे में जानने की इच्छा प्रकट की थी। फिर खुशवंत जी ने अपने एक लेख में लिखा कि मैं अमृता और साहिर की कहानी सुनकर बहुत निराश हुआ था क्योंकि मेरा मानना है कि इस कहानी को एक Revenue Stamp (रसीदी टिकट) भर में लिखा जा सकता है। खुशवंत सिंह की बात अमृता प्रितम के मन में इस कदर घर कर गई कि उन्होंने अपनी आत्मकथा का नाम Revenue Stamp के शाब्दिक अनुवाद जो कि रसीदी टिकट है रख लिया।

इस पुस्तक में लेखिका का जीवन यात्राए है और उनके भीतर की अंतयात्राए भी। साथ ही औरत की वह हकीकत भी जो उसे कमजोर भी बनाती है और मजबुत भी। यहाँ अमृता प्रितम की रचना प्रक्रिया और अंतः सूत्र खुलते हैं तो पात्रों की अर्तकथाएं भी। इस किताब को पढ़ना एक खुमारी से गुजरना है जो आपको नायिका की जिंदगी के हर सच्चाई से सामना करा देती है।



विटामिन खनिज की कमी और पोषण का महत्व

वी.सविता, रोकड़िया/दवा

विटामिन और खनिज की कमियां इंसान और उसके शरीर को कमजोर बना देती हैं। विटामिन और खनिज पदार्थ हमारे शरीर की सुरक्षा करते हैं और इनकी कमी हमारे शरीर के हर एक अंग को कमजोर बना सकती है। विटामिन-ए की कमी से हमारे आंखों की रोशनी कम हो जाती है और इससे रात में देखने की शक्ति भी कम हो जाती है। इसलिए विटामिन-ए की कमी को रोकने के लिए पीले, लाल, और नारंगी रंग के फलों और सब्जियों का सेवन करना चाहिए जैसे कि गाजर, कद्दू, शकरकंद, शिमला-मिर्च आदि सब्जियों को खाना चाहिए। इसी प्रकार विटामिन-डी की कमी से हड्डियां कमजोर हो जाती हैं क्योंकि विटामिन-डी के कमी के साथ कैल्शियम का अवशोषण कम हो जाता है इसलिए हमारी हड्डियां और जोड़ों को मजबूत बनाने के लिए विटामिन-डी और कैल्शियम से भरपूर भोजन का सेवन करना चाहिए जैसे कि दूध, दही, हरी-पल्लेदार सब्जियां जैसे ब्रोकली, पालक आदि खाना चाहिए। मशरूम भी विटामिन-डी का अच्छा स्रोत माना जाता है, विटामिन-सी के कमी से स्कर्वि रोग होती है इसलिए इसे रोकने के लिए विटामिन-सी से भरपूर फलों और सब्जियों जैसे कि निंबू, टमाटर, आमला, अमरूद आदि खाना चाहिए। शरीर में आयरन की कमी होने पर हेमोग्लोबिन कम होने लगता है। आयरन की कमी होने से एनीमिया हो जाता है और इस बीमारी से बचने के लिए अनार, चुकंदर, मांस, मछली, मुर्गा आदि खाना चाहिए। इसके साथ विटामिन-बी-कॉम्प्लेक्स भी जरूरी है, क्योंकि वह हमारे शरीर को इंफेक्शन या संक्रमण से आयरन की अवशोषण अधिक हो जाता है। इसलिए आयरन के साथ विटामिन-सी लेना जरूरी है परंतु आयरन के अवशोषण आयरन को कम कर सकता है कैल्शियम। सही तरीके से खाओ और पोषण पाओ !





प्रौढ़ शिक्षा

गिरीश कुमार
लेखापरीक्षक

प्रौढ़ शिक्षा से अभिप्राय है 25 वर्ष से 50 वर्ष की आयु वाले स्त्री-पुरुष जिन्होंने प्राथमिक शिक्षा का अवसर गवा दिया है लेकिन, अब वह साक्षरता, आधारभूत शिक्षा, कौशल विकास (व्यावसायिक शिक्षा) और इसी तरह की अन्य शिक्षा सहित किसी तरह के ज्ञान की आवश्यकता का अनुभव करते हैं। ऐसे निरक्षर या अशिक्षित लोगों को शिक्षा देना, उन्हें साक्षर बनाना, प्रौढ़ शिक्षा कहलाता है।

शिक्षा का प्रसार आज की अपेक्षा 25-30 वर्ष पहले इतना अधिक नहीं था। उस समय जीविकोपार्जन ही प्रमुख हुआ करता था। किसान, मजदूर, छोटे-तबके के लोगों और विशेष महिलाएं सुचारु रूप से व्यवस्थित शिक्षा नहीं प्राप्त कर सकते थे और उम्र बीत जाने के बाद वैसे साधन नहीं थे कि वह कम से कम अक्षर ज्ञान भी प्राप्त कर सके इसलिए एक पीढ़ी का अधिकांश भाग अनपढ़ ही रह गया। यह प्रवृत्ति किसी हद तक आज भी विद्यमान है। 2011 की जनगणना के अनुसार देश में 15 वर्ष और उससे अधिक आयु वर्ग में गैर साक्षरों की कुल संख्या 25 करोड़ (पुरुष 9 करोड़, महिला 16 करोड़) है। 2009-10 से 2017-18 के दौरान साक्षर भारत कार्यक्रम के तहत साक्षर के रूप में प्रमाणित व्यक्तियों की 7.6 करोड़ की प्रगति को ध्यान में रखते हुए, यह अनुमान लगाया गया है कि वर्तमान में भारत में लगभग 18 करोड़ वयस्क अभी भी गैर साक्षर हैं।

शिक्षा मनुष्य को सत्य की पहचान कराने वाली है। विद्वानों का कहना है कि शिक्षा जब भी जहां भी मिले उसे हाथ बढ़ाकर स्वीकार करना चाहिए। आज के प्रगतिशील युग में कोई भी व्यक्ति अशिक्षित रह कर समय के साथ नहीं चल सकता। फिर चाहे गांव हो या शहर, वह अपने देश, समाज और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के बल पर ही जुड़ सकता है। देश विदेश में अनेक प्रकार की प्रगति हो रही है, उन्नति विकास की योजनाएं चल रही हैं। अशिक्षित व्यक्ति या तो उनसे अपरिचित रहता हुआ समुचित लाभ नहीं उठा पाता या फिर अशिक्षा के कारण ठगा जा सकता है। ऐसे में यह वर्ग शिक्षित बनकर ही ठीक से जीवन योग्य बना सकता है।

प्रौढ़ शिक्षा में कम से कम निम्न पांच प्रकार के कार्यक्रम शामिल होते हैं -

1. बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान
2. महत्वपूर्ण जीवन कौशल (जैसे वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, व्यावसायिक कौशल, स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता, शिशु पालन एवं शिक्षा और परिवार कल्याण)
3. व्यावसायिक कौशल विकास (स्थानीय रोजगार की प्राप्ति के मद्देनजर)
4. बुनियादी शिक्षण (प्रारंभिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर माध्यमिक स्तर के समझ)

5. सतत शिक्षा (जैसे कला, विज्ञान, तकनीकी, संस्कृति, खेल, मनोरंजन आदि अन्य महत्वपूर्ण विषय)

प्रौढ़ शिक्षा का उद्देश्य यह है कि, जो लोग अब तक शिक्षा का महत्व नहीं समझ सके, कम से कम वह आने वाली पीढ़ियों को प्रगतिशील समाज के अनुकूल ढाल सके। न केवल वह अपनी योग्यता बढ़ाएं अपितु अपने में समझ-बूझ पैदा कर अपने धंधे में समुचित विकास कर सकें।

प्रौढ़ शिक्षा पाने के लिए व्यक्ति को कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं है और ना ही समय की पाबंदी का प्रश्न है उनके लिए शिक्षा की व्यवस्था ऐसे समय में आयोजित की गई है कि जब वह अपने समस्त दैनिक कार्यों से फुरसत पाकर थोड़ा बहुत समय पढ़ाई में लगा सके (तकरीबन रात 8 से 10 बजे)। महिलाओं के लिए निर्धारित समय दोपहर 2 से 4 बजे ताकि वह रोजमर्रा के कार्यक्रम से निवृत्त होकर समय से शिक्षा ग्रहण कर सके। शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण सामग्री जो उन्हें मुफ्त में मुहैया कराने की व्यवस्था सरकार द्वारा अपेक्षित की जाती है। इसके अतिरिक्त प्रेरकों को 2000 प्रति माह के हिसाब से उनको मानदेय का भुगतान भी किया जाता है। सरकार ने आज जगह-जगह नगर, गांव, कस्बों में प्रौढ़ शिक्षा केंद्र स्थापित कर रखे हैं। अधिकांश लोग इस व्यवस्था का भरपूर लाभ उठा रहे हैं। जो लोग संकोच करते हैं, वह समाज को देखते हुए स्वयं प्रेरित हो रहे हैं। जहां यह व्यवस्था अथवा केंद्र अभी नहीं चालू हो पाए हैं वहां लोग जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी को सामूहिक स्तर पर पत्र लिखकर व्यवस्था करवा सकते हैं।

प्रौढ़ शिक्षा निरक्षर व अनपढ़ लोगों का शैक्षिक विकास करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। व्यक्ति अपने योग्यताओं तथा क्षमता को ठीक ढंग से विकसित कर सकता है। भारत एवं विश्व भर में हुए व्यापक शोध अध्ययन और विश्लेषण स्पष्ट तौर पर यह दर्शाते हैं कि, राजनीतिक-इच्छाशक्ति, संगठनात्मक-संरचना, उचित योजना पर्याप्त वित्तीय सहायता और स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं का उच्चतरगुणवत्ता क्षमता, संवर्धन, सामुदायिक भागीदारी और एकजुट होना प्रौढ़ शिक्षा की सफलता के महत्वपूर्ण कारक हैं।

अतः शिक्षा का महत्व जीवन में सर्वोपरि है, इसलिए कहा गया है -

विद्यां ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम् ।

पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनात् धर्मं ततः सुखम् ॥

अर्थात् ज्ञान विनय देता है, विनय से पात्रता, पात्रता से धन, धन से धर्म और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है। अतः इसका महत्व जो नहीं समझ पा रहे थे, वे आज समझ रहे हैं, जो आज नहीं समझ रहे हैं, वह कल अवश्य समझेंगे। आज की युवा पीढ़ी का भी यह कर्तव्य है कि, वह अपने आस-पास और अशिक्षित और अनपढ़ लोगों में शिक्षा के प्रति उत्साह जगाने में अपनी भूमिका निभाएं। प्रौढ़ शिक्षा निश्चित ही एक प्रशंसनीय योजना है ।



एलागिरी हिल्स की यात्रा

अविनाश कुंदन
लेखापरीक्षक

समुद्र तल से लगभग 1,111 मीटर की ऊंचाई पर स्थित और 30 किमी में फैली, येलागिरी हिल बागों, गुलाब-उद्यानों और हरी घाटियों से घिरा हुआ है। ये हिल्स अन्नमलाई हिल्स की एक शाखा है। येलागिरी भारत में ट्रेकर्स के लिए प्रसिद्ध स्थानों में से एक है। येलागिरी में 14 बस्तियां और कई पहाड़ियों में फैले कई मंदिर शामिल हैं। यह हिल स्टेशन नवगठित तिरुपतूर जिले में वनियाम्बाडी और जोलारपेट्टई शहरों के बीच स्थित एक छोटा सा हिल स्टेशन है। यह हिल स्टेशन ब्रिटिश औपनिवेशिक काल का है। "पूरा येलागिरी हिल कभी येलागिरी जमींदार परिवार की निजी संपत्ति थी। इसे 1950 के दशक की शुरुआत में भारत सरकार द्वारा लिया गया था।

एलागिरी हिल स्टेशन तमिलनाडु के अन्य हिल स्टेशनों जैसे ऊटी या कोडईकनाल की तरह विकसित नहीं है। हालांकि, जिला प्रशासन ने अब पैराग्लाइडिंग और रॉक क्लाइम्बिंग जैसे साहसिक खेलों को बढ़ावा देकर येलागिरी हिल्स को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने का काम शुरू कर दिया है। येलागिरी में उच्चतम बिंदु स्वामी मलाई हिल है, जो 4,338 फीट लंबा है। स्वामी मलाई पहाड़ियाँ केक के आकार की पहाड़ियाँ हैं जिनके तल पर एक मजबूत आधार और एक ऊँची चोटी है। येलागिरी हिल्स सैकड़ों सांपों का घर है। मानसून के मौसम में येलागिरी की जलवायु ठंडी होती है। दैनिक मौसम आमतौर पर सुहावना होता है। सर्दियों में गर्मियों की तुलना में बहुत कम बारिश होती है। मई के अंत में मनाए जाने वाले प्रसिद्ध येलागिरी ग्रीष्मकालीन त्योहार का आयोजन तमिलनाडु पर्यटन विकास बोर्ड द्वारा किया जाता है। विभिन्न विभागों के स्टॉल, फूल शो, बोट हाउस विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम और विभिन्न प्रकार के कुत्तों की नस्लों के साथ डॉग शो हर साल आयोजित किए जाते हैं। इस वार्षिक महोत्सव में देश भर के अन्य हिस्सों से लोग भाग लेते हैं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार द्वारा 21 और 22 अगस्त 2022 को एलागिरी पहाड़ियों के भ्रमण के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था, यह पहली बार है जब हमारे कार्यालय द्वारा इस तरह के मनोरंजक गतिविधि का आयोजन किया गया है। दिनांक 22-08-2022 को सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों से सुबह 6 बजे तक आने के लिए अनुरोध किया गया था और तदनुसार सभी समय से पहुंच गए, हमारी यात्रा हमारे कार्यालय परिसर से शुरू हुआ, 12 बसों को यात्रा के लिए रखा गया था, बसें एक-एक करके शुरू हुईं, और हमारी एलागिरी हिल्स की यात्रा प्रारंभ हो गयी। लगभग एक घंटे की दूरी तय कर हम तिरुमिज़िसाई में नाश्ते के लिए रुके। एक-एक कर सभी बसें होटल के पास रुकीं। सभी ने नाश्ते का लुटफ

लिया और फिर से हम एलगिरि की ओर चल पड़े। रास्ता बहुत ही सुहाना और मनमोहक था । लगभग छह घंटे की दूरी तय कर हम एलगिरि पहुँच गये। हमारे कार्यालय के अधिकारियों, खास तौर पर प्रधान महालेखाकार और महालेखाकार (प्रशासन) ने ऑफिस के सहकर्मियों और उनके परिवार वालों के लिए तीन रिसॉर्ट्स बुक करवाया था, रिसॉर्ट में सारी सुविधा उपलब्ध थी। जैसे- स्विमिंग पूल, टहलने के लिए पार्क, चाय और नाश्ता इत्यादि ।

एलागिरी पहुँच कर सभी अपने-अपने रिसॉर्ट में चले गये। हमारा कार्यक्रम पहले से तय था, इसलिए और भी आनंद आ रहा था। सभी ने लंच के बाद थोड़ा आराम किया और फिर बारी-बारी से घूमने निकल पड़े। हम पहले बोट हाउस गए, लगभग चालीस मिनट की बोटिंग की और फिर नेचर पार्क की तरफ चल पड़े, नेचर पार्क की स्थापना वर्ष 2008 में की गई थी। इसमें एक मछलीघर, गुलाब उद्यान, एक कृत्रिम जल प्रपात और एक संगीतमय फव्वारा शामिल है। नेचर पार्क में प्रवेश ही कर रहे थे की मंद-मंद बारिश आ गयी। मौसम इतना सुहाना हो गया, मानो वो कह रहा हो कि हर एक पल का आनंद लें। हम बारिश का लुत्फ ले ही रहे थे कि कब शाम हो गयी पता ही नहीं चला। ऐसा लग रहा था मानो ये वादियाँ कह रही हो सब कुछ यहीं है, और कहीं जाने की जरूरत नहीं पर हम समय से बंधे थे हम सभी अपने अपने रिसॉर्ट में चले गये। थोड़ा आराम करने के बाद शाम में डीजे नाइट का आयोजन भी था। डीजे नाइट में लगभग सभी लोगों ने डांस किया । ऐसा माहौल बन गया मानो सभी एक साथ मिल कर किसी परिवारिक उत्सव का आनंद ले रहे हों। डीजे नाइट के बाद सभी ने डिनर किया और अपने-अपने रूम में रेस्ट करने चले गये। सुबह-सुबह उठते ही चिड़ियों की मनमोहक धुन , वादियों की महक और चारों तरफ कुहासे से मन प्रफुल्लित हो चुका था। टहलते हुए हमने एलगिरि के लगभग सभी फूलों, फलों को देखा वो बहुत शुद्ध व ताजे थे। वापस आ कर सभी नहा धो कर तैयार हो गए, सब ने नास्ता किया और फिर जलगमपारई झरना की ओर चल पड़े। यह झरना हमारे रिसॉर्ट से लगभग 40 किलोमीटर की दूरी पर है हम तकरीबन एक बजे वहाँ पहुँच गये सभी ने झरने में खूब नहाया, और फिर धीरे धीरे वहाँ से वापस होना शुरू कर दिया। वापस आते हुए रास्ते में ही हमारे प्रधान महालेखाकार और महालेखाकार (प्रशासन) की ओर से लंच का उत्तम प्रबंध था, सभी ने इसका लुत्फ लिया और फिर हम चेन्नई के लिए रवाना हो गये ।

कल्याण कक्ष गतिविधियाँ

अप्रैल 2021 से मार्च 2022 तक की अवधि के दौरान खेल में कल्याण अनुभाग द्वारा गतिविधियाँ

क्र.सं	खिलाड़ी/टीम का नाम	टूर्नामेंट की अवधि		टूर्नामेंट का नाम	द्वारा संचालित/नामांकित
		से	तक		
बैडमिंटन					
1.	श्री के आर शिवकुमार सहायक पर्यवेक्षक/ शा.का.-टीएनईबी श्री एम जेरी मार्टिन सहायक पर्यवेक्षक/ शा.का.-टीएनईबी	19.09.2021	26.09.2021	गोवा में अखिल भारतीय सीनियर रैंकिंग बैडमिंटन टूर्नामेंट में सीएजी की बैडमिंटन टीम (40 से अधिक वर्ग) का प्रतिनिधित्व किया	बीएआई बैडमिंटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया
2.	श्री के आर शिवकुमार सहायक पर्यवेक्षक/ शा.का.-टीएनईबी	28.11.2021	04.12.2021	ह्यूएलवा, स्पेन में बीडब्ल्यूएफ विश्व सीनियर बैडमिंटन चैंपियनशिप में भारतीय बैडमिंटन टीम का प्रतिनिधित्व किया	बीडब्ल्यूएफ (बैडमिंटन विश्व महासंघ और बैडमिंटन एशिया परिसंघ)

3.	श्री एम जेरी मार्टिन सहायक पर्यवेक्षक/ शा.का.-टीएनईबी	24.02.2022	28.02.2022	ओलिंपिक गोल्ड क्वेस्ट बैडमिंटन कोच प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया	बैडमिंटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया
4.	श्री के आर शिवकुमार सहायक पर्यवेक्षक/ शा.का.-टीएनईबी	24.03.2022	30.03.2022	पंचकुला, हरियाणा में अखिल भारतीय सिविल सेवा, बैडमिंटन टूर्नामेंट 2021-22 में भाग लिया	सीसीएसआरबी & सीएस केंद्रीय सिविल सेवा क्षेत्रीय बोर्ड और सांस्कृतिक खेल

क्र.सं	खिलाड़ी/टीम का नाम	टूर्नामेंट की अवधि		टूर्नामेंट का नाम	द्वारा संचालित/ना मांकित
		से	तक		
क्रिकेट					
1.	श्री के विगनेश, व.लेप./ पीबीएस-II श्री एस अश्वथ, व.लेप./ पीबीएस-I	03.08.2021	23.08.2021	पुदुचेरी सीचेम टी20 टूर्नामेंट में भाग लिया	पीसीए (पुदुचेरी क्रिकेट एसोसिएशन)
2.	एजीओआरसी क्रिकेट टीम	16.08.2021	23.08.2021	चेन्नई में 51वें अखिल भारतीय वाईएससीए ट्रॉफी क्रिकेट टूर्नामेंट 2021 में भाग लिया	टीएनसीए (तमिलनाडु क्रिकेट एसोसिएशन)
3.	श्री के विगनेश, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	14.10.2021	26.10.2021	पांडिचेरी में बीसीसीआई की	बीसीसीआई (भारत में)

	/ पीबीएस-॥			सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी 2020-21 के सिलसिले में बायो बबल कैंप में भाग लिया	क्रिकेट के लिए नियंत्रण बोर्ड)
4.	श्री के विगनेश, व.लेप./ पीबीएस-॥ श्री एस अश्वथ, व.लेप./ पीबीएस-॥	27.11.2021	03.12.2021	वायनाड में विजय हजारे टूर्नामेंट के संबंध में बायो बबल कैंप में भाग लिया	बीसीसीआई
5.	श्री के विगनेश, व.लेप./ पीबीएस-॥ श्री एस अश्वथ, व.लेप./ पीबीएस-॥	04.12.2021	14.12.2021	तिरुवेंद्रम में विजय हजारे टूर्नामेंट में भाग लिया	बीसीसीआई
6.	श्री के विगनेश, व.लेप./ पीबीएस-॥ श्री एस अश्वथ, व.लेप./ पीबीएस-॥	28.12.2021	07.01.2022	पांडिचेरी में रणजी ट्रॉफी टूर्नामेंट 2021-22 के संबंध में बायो बबल कैंप में भाग लिया	पीसीए
7.	श्री के विगनेश, व.लेप./ पीबीएस-॥ श्री एस अश्वथ, व.लेप./ पीबीएस-॥	31.01.2022	15.02.2022	पांडिचेरी में रणजी ट्रॉफी टूर्नामेंट 2021-22 के संबंध में तैयारी शिविर में भाग लिया	पीसीए
8.	श्री एस अश्वथ, व.लेप./ पीबीएस-॥	12.02.2022	07.03.2022	पांडिचेरी में रणजी ट्रॉफी टूर्नामेंट 2021-22 में भाग लिया	बीसीसीआई
9.	श्री ए सी प्रतिबन, व.लेप./ सीयू-4 श्री के विगनेश, व.लेप./ पीबीएस-॥ श्री एस अश्वथ, व.लेप./ पीबीएस-॥	10.03.2022	15.03.2022	नई दिल्ली में अखिल भारतीय सिविल सेवा क्रिकेट टूर्नामेंट 2021-22 में भाग लिया	सीसीएसआर बी & सीएस

फुटबॉल					
1.	श्री एस सैमसनराज, पीबीएस- डीपी सेल	11.10.2021	18.10.2021	तेलंगाना में अखिल भारतीय आमंत्रण फुटबॉल लीग में भाग लिया	अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ
2.	श्री पी भास्कर, सहायक पर्यवेक्षक/ शा.का.-टीएनईबी	12.03.2022	16.03.2022	डेगू कोरिया गणराज्य में एएफसी चैंपियंस लीग 2022 में रेफ्री असेसर के रूप में भाग लिया	एएफसी
हॉकी					
1.	श्री एम मोसेस रूबन, सहायक पर्यवेक्षक	23.09.2021	30.09.2021	हरियाणा में अखिल भारतीय सिविल सेवा हॉकी टूर्नामेंट 2020-21 में प्रबंधक के रूप में भाग लिया	सीसीएसआर बी & सीएस
2.	श्री एम मीनाक्षी सुंदरम, पर्यवेक्षक/ एएमजी-III/ हाईवे-II	08.10.2021	10.10.2021	35वें राज्य स्तरीय हॉकी टूर्नामेंट-2021 में नगरसंपट्टी, कृष्णागिरि जिले में अंपायर के रूप में भाग लिया	एचयूटी
3.	श्री.वी.वीरतमिलन	02.03.2022	27.03.20 22	नई दिल्ली में सीएजी की हॉकी टीम के लिए चयन ट्रायल- सह-कोचिंग शिविर में भाग लिया । भोपाल में 'ओबैदुल्ला खान हेरिटेज कप' हॉकी टूर्नामेंट में भाग लिया।	भा.के नि एवं मलेप

अप्रैल 2021 से मार्च 2022 की अवधि के दौरान कल्याण अनुभाग द्वारा खेल के अलावा अन्य गतिविधियाँ

क्र.सं	दिनांक	गतिविधियाँ
1.	20.05.2021	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1), कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) तथा कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा सामाजिक दूरी (सोशल डिस्टेंसिंग) का पालन करते हुए अपने सम्बंधित कार्य स्थान से दिनांक 20.05.2021 को पूर्वाह्न 11.00 बजे "आतंकवाद विरोधी दिवस" का संकल्प लिया गया।
2.	23.09.2021 & 24.09.2021	अग्रवाल नेत्र अस्पताल, चेन्नई द्वारा मीटिंग हॉल, लेखापरीक्षा भवन की 7 वीं मंजिल में सुबह 10.30 बजे से शाम 4.00 बजे के बीच 23.09.2021 और 24.09.2021 को एक निःशुल्क नेत्र शिविर आयोजित किया गया था। तीनों लेखापरीक्षा कार्यालयों के 267 स्टाफ सदस्यों ने शिविर में भाग लिया और लाभान्वित हुए।
3.	08.03.2022	अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (आईडब्ल्यूडी) समारोह 08/03/2022 को लेखापरीक्षा भवन की 7 वीं मंजिल, तेनामपेट, चेन्नई -18 में आयोजित किया गया था। श्रीमती अरुलमोड़ी, अधिवक्ता, चेन्नई उच्च न्यायालय और श्रीमती निशा एनएस आईपीएस, सहायक महानिरीक्षक, आधुनिकीकरण, क्रमशः मुख्य अतिथि और सम्मानित अतिथि थे। प्रधान महालेखाकार के निर्देशानुसार तीनों लेखापरीक्षा कार्यालयों की सभी महिला कर्मचारियों को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (आईडब्ल्यूडी) के लिए उपहार देकर सम्मानित किया गया। कार्यालय प्रधान महालेखार (लेखापरीक्षा-1) के कल्याण प्रकोष्ठ द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए जैसे स्मृति (मेमोरी) गेम, पिरामिड में पेपर कप की व्यवस्था करना, डार्ट गेम वोकल म्यूजिक प्रतियोगिता (पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए), बैलून गेम, 'क्या महिलाओं की स्वतंत्रता पूर्ण है या नहीं' हां या नहीं प्रारूप में तमिल में वाद-विवाद और कैरम प्रतियोगिता भी 02.03.2022 से 07.03.2022 तक आयोजित की गई थी और आईडब्ल्यूडी समारोह के दौरान पुरस्कार वितरित किए गए थे।
4.	अप्रैल-2021 से मार्च-2022	21 अप्रैल से 22 मार्च की अवधि के दौरान इस कार्यालय में उनतीस कोविड-19 पॉजिटिव मामले सामने आए हैं। कर्मचारियों के अनुरोध पर तत्काल आपातकालीन सहायता प्रदान की गई,

		<p>कर्मचारी के स्वास्थ्य की स्थिति के आधार पर / सरकारी डॉक्टरों / सरकारी अस्पताल के अधिकारियों के परामर्श पर अधिकारियों के आवश्यक इनपेशेंट आवास की व्यवस्था की गई। कोविड 19 महामारी से निपटने के लिए निवारक उपाय के रूप में, कल्याण कक्ष द्वारा क्रमशः 16.07.2021, 22.10.2021 हाथ 18.02.2022 को तीन टीकाकरण शिविरों की व्यवस्था की गई और तीनों लेखापरीक्षा कार्यालयों से लगभग 454 अधिकारी / कर्मचारी सदस्य लाभान्वित हुए।</p> <p>इसके बाद कर्मचारियों / अधिकारियों की आवश्यकता के आधार पर कोविड - 19 टीकाकरण की व्यवस्था निदेशक सार्वजनिक स्वास्थ्य, डीएमएस कैंप, चेन्नई और किंग इंस्टीट्यूट, गिंडी, चेन्नई में की गई। जब भी कोविड-19 के लक्षणों का पता चलता है, आपातकालीन आधार पर तुरंत राज्य स्वास्थ्य प्रयोगशाला (लेबोरेटरी), डीएमएस कैंप, चेन्नई में कोविड-19 सैप परीक्षण की व्यवस्था की गई और परीक्षण रिपोर्ट उसी दिन भेजी गई।</p> <p>इसके अलावा महामारी के दौरान कर्मचारियों के बीच प्रतिरक्षा बढ़ाने के लिए, छह महीने की अवधि के लिए महीने में तीन बार इम्युनिटी बूस्टर/कबासुरकुदिनीर वितरित किए गए और अधिकारियों/कर्मचारियों की प्रतिरक्षा बढ़ाने के लिए होम्योपैथी मेडिसिन आर्सेनिक एल्बम - 30 को स्टाफ सदस्यों के बीच वितरित किया गया।</p>
5.	अप्रैल-2021 से मार्च-2022	<p>21 अप्रैल से 22 मार्च की अवधि के दौरान सेवानिवृत्ति/स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति पर सेवा निवृत्त होने वाले कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- II) के बारह अधिकारियों के लिए विदाई समारोह आयोजित किया गया था।</p>



हिंदी दिवस-2021 के कार्यक्रम का आनंद उठाते हुए कर्मचारी



हिंदी पखवाड़ा 2021के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता

